नई सोच नवीन पहल नि:स्वार्थ सेवा

सामान्य ज्ञान ग्रुप

ओम प्रकाश पंवार
घड़साना, श्री गंगानगर

श्री दुर्गेश चौधरी
खाजूवाला, बीकानेर

मनोविज्ञान नोट्स

मनोविज्ञान

- मनोविज्ञान को शताब्दियों पूर्व दर्शनशास्त्र की एक शाखा के रूप में माना जाता था |
- मनोविज्ञान को स्वतन्त्र विषय बनाने के लिए इसे परिभाषित करना शुरू किया गया |
- Psychology शब्द की उत्पति लेटिन व यूनानी के दो शब्दों Psychi + logos से मिलकर हुई है |
- Psychi का अर्थ होता है – आत्मा तथा logos का अर्थ होता है – अध्ययन करना / विज्ञान |
- इसी शाब्दिक अर्थ के आधार पर सर्वप्रथम प्लेटो, अरस्तु, डेकार्ट आदि के द्वारा मनोविज्ञान को "आत्मा का विज्ञान" माना गया |
- आत्मा शब्द की स्पष्ट व्याख्या नही होने के कारण 16 वीं शताब्दी के अंत में यह परिभाषा अमान्य हो गई |
- 17 वीं शताब्दी में इटली के मनोवैज्ञानिक पोम्पोनोजी के द्वारा मन या मस्तिष्क का विज्ञान माना गया , बाद में यह परिभाषा भी अमान्य हो गयी |
- 19 वीं शताब्दी में विलियम वुंट, विलियम जेम्स वाइव्स,जेम्स सली आदि के द्वारा मनोविज्ञान को " चेतना का विज्ञान" माना गया |
- अपूर्ण अर्थ होने के कारण यह परिभाषा भी अमान्य हो गयी |
- विलियम वुंट ने जर्मनी के लिपंजिग नामक स्थान पर 1879 में प्रथम मनोवैज्ञानिक शाखा स्थापना की |
- इसलिए विलियम वुंट को प्रयोगशाला विज्ञान का जनक माना जाता है |
- इसी समय से मनोविज्ञान दर्शनशास्त्र की शाखा के रूप से अलग होकर एक स्वतन्त्र विषय के रूप में सामने आया |
- लिपजिग विश्वविद्यालय को वर्तमान में कार्ल-मार्क्स विश्वविद्यालय के नाम से जाना जाता है |
- विलियम मैक्डूगल ने अपनी पुस्तक Outline Psychology के पृष्ठ 16 पर चेतना शब्द की कड़ी निंदा की |
- 20 वीं शताब्दी में मनोविज्ञान को व्यवहार का विज्ञान माना गया और आज तक यही परिभाषा प्रचलित है |
- व्यवहार का विज्ञान मानने वाले प्रमुख मनोवैज्ञानिक है :- वाटसन
- इसके अलावा वुडवर्थ , स्किनर ,थोर्नडाइक , मैक्डूगल आदि के द्वारा भी मनोविज्ञान को व्यवहार विज्ञान माना गया है

मनोविज्ञान की परिभाषाएँ

- **वाटसन के अनुसार** : - मनोविज्ञान व्यवहार का शुद्ध विज्ञान है |
- **NOTE :-** जेम्स ड्रेवर के द्वारा भी मनोविज्ञान को व्यवहार का विज्ञान माना गया है |

- **वाटसन के अनुसार** : - तुम मुझे कोई भी बालक दे दो , मै उसे वैसा बना सकता हूँ जैसे मै बनाना चाहता हूँ|
- **वुडवर्थ के अनुसार** : - मनोविज्ञान ने सर्वप्रथम अपनी आत्मा का त्याग किया , फिर मन का त्याग किया फिर चेतना का त्याग किया और आज मनोविज्ञान व्यवहार की विधि के स्वरुप को स्वीकार करता है |
- **क्रो एव क्रो के अनुसार** : - 20वीं शताब्दी बच्चो की शताब्दी है |

मनोविज्ञान के जनक : -	अरस्तु
शिक्षा मनोविज्ञान के जनक : -	थार्नडाइक
प्रयोगात्मक मनोविज्ञान के जनक : -	विलियम वुंट
आधुनिक मनोविज्ञान के जनक : -	विलियम वुंट
अमेरिकन मनोविज्ञान के जनक : -	विलियम जेम्स
किशोर मनोविज्ञान के जनक : -	स्टेनली होल
व्यक्तित्व मनोविज्ञान के जनक : -	जीन पियाजे
व्यवहारवाद के जनक : -	वाटसन
मूल प्रवृति के जनक : -	मैक्डूगल
मौलिक व्यवहारवादी के जनक : -	स्किनर

मनोविज्ञान की मुख्य शाखाएँ

1. सामान्य मनोविज्ञान
2. असामान्य मनोविज्ञान
3. तुलनात्मक मनोविज्ञान
4. समाज मनोविज्ञान
5. प्रयोगात्मक मनोविज्ञान
6. ओद्योगिक मनोविज्ञान
7. बाल मनोविज्ञान
8. किशोर मनोविज्ञान
9. प्रौढ़ मनोविज्ञान
10. विकासात्मक मनोविज्ञान
11. शिक्षा मनोविज्ञान
12. पशु मनोविज्ञान
13. निदानात्मक मनोविज्ञान
14. परा मनोविज्ञान

शिक्षा मनोविज्ञान

- मनोविज्ञान की शाखा में शिक्षा मनोविज्ञान की उत्पति 1900 में मानी जाती है | बाद में थार्नडाइक , जड़ , टश्मन आदि के प्रयासों से 1920 में शिक्षा मनोविज्ञान को स्पष्ट स्वरूप प्राप्त हुआ |
- थार्नडाइक को प्रथम शैक्षिक मनोवैज्ञानिक माना जाता है |
- शिक्षा में मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण का सूत्रपात रूसो ने किया |
- **रूसो के अनुसार** : - बालक एक पुस्तक के समान है जिसका अध्ययन प्रत्येक अध्यापक को करना चाहिए |
- शिक्षा के अंग्रेजी शब्द Education की उत्पति लैटिन भाषा के Education से हुई |
- E + Duco
  (अन्दर से) (बाहर निकलना)
  अर्थात शिक्षा बालक की अन्दर निहित योग्यताओ को बाहर निकालकर उसके व्यवहार में परिवर्तन या परिमार्जन करती है |
- Education शब्द की उत्पति लैटिन भाषा के दो शब्दों Educare व Educere से भा मानी जाती है | जिसका अर्थ होता है – आगे बढ़ाना / बाहर निकालना / विकास करना |
- मानव व्यवहार का अध्ययन कर उसमे परिवर्तन या परिमार्जन करना ही शिक्षा मनोविज्ञान है

शिक्षा मनोविज्ञान की परिभाषाएं

- **क्रो एव क्रो के अनुसार** : - शिक्षा मनोविज्ञान व्यक्ति के जन्म से लेकर वृद्धावस्था सीखने के अनुभवों का वर्णन तथा व्याख्या करता है |
- **स्किनर के अनुसार** : - शिक्षा मनोविज्ञान मानवीय व्यवहार का शैक्षिक परिस्थितियों में अध्ययन करता है |
- **स्किनर के अनुसार** : -शिक्षा मनोविज्ञान वह शाखा है जो सीखने व सीखने की प्रक्रिया का अध्ययन करती है |
- **स्किनर के अनुसार** : - शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षकों की तैयारी की आधारशिला है |
- **पिल के अनुसार** : - शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षा का विज्ञान है |
- **जेम्स ड्रेवर के अनुसार** : - शिक्षा मनोविज्ञान वह शाखा है जो मनोवैज्ञानिक सिद्धांतो एव खोजो के प्रयोग के साथ ही शिक्षा की समस्याओ के वैज्ञानिक अध्ययन से सम्बन्धित है |

शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति

- शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति वैज्ञानिक है , किसी भी वैज्ञानिक पद्धति में हम उसका अध्ययन करते है जिसका निरीक्षण किया जा सके अतः शिक्षा मनोविज्ञान व्यवहार का अध्ययन करता है जिसका निरीक्षण किया जा सकता है |
- शिक्षा मनोविज्ञान एक अनुप्रयुक्त व्यवहारिक विज्ञान है जो की मानव के व्यवहार का शैक्षिक परिस्थितियों में वैज्ञानिक अध्ययन करता है |
- शिक्षा मनोविज्ञान एक विधायक (सकारात्मक)विज्ञान है जो शिक्षा के कब , कैसे और कहाँ आदि प्रश्नों के उत्तर पर ध्यान केन्द्रित करता है |
- शिक्षा मनोविज्ञान अतीत की अपेक्षा वर्तमान की घटनाओ के क्या और क्यों से सम्बधित है |
- इसमें नियमो व सिद्धांतो का प्रयोग किया जाता है |
- इसके सिद्धांत सार्वभौमिक होते है |
- इसके द्वारा भविष्यवाणी की जा सकती है |

शिक्षा मनोविज्ञान के कार्यक्षेत्र

- **लिंडग्रेन के अनुसार : -**
- 1. शिक्षार्थी (शिक्षा प्रक्रिया का केंद्र बिंदु)
- 2. सीखने की प्रक्रिया
- 3. सीखने की परिस्थिति
- 4. मापन एव मूल्याकन
- 5. निर्देशन एव मानसिक स्वास्थ्य

शिक्षक के लिए शिक्षा मनोविज्ञान की उपयोगिता

- शिक्षा मनोविज्ञान के ज्ञान के द्वारा शिक्षक का दृष्टिकोण उन्नत व व्यापक हो जाता है |
- ऐसा शिक्षक किसी भी प्रकार की कक्षा में शैक्षिक परिस्थितया जागृत कर सकता है |
- ऐसा शिक्षक स्वयं को जान सकता है तथा बालक को पहचान सकता है |
- ऐसा शिक्षक बालको के प्रति प्रेम , सहानुभूति व समदर्शी भाव को अपनाता है |
- कक्षा में अनुशासन स्थापित कर सकता है |
- व्यक्तिगत विभिन्नता के अनुसार शिक्षण प्रदान किया जा सकता है |

- बालको के चहुमुखी विकास के लिए उचित शिक्षण विधियों को अपनाया जा सकता है |
- बालको को शैक्षिक व व्यवहारिक निर्देशन दिया जा सकता है |
- बालको को विभिन्न प्रकार से अभिप्रेरित करते हुए उनमे रूचि जागृत की जा सकती है |
- बालको के व्यवहार का अध्ययन कर उनमे परिवर्तन या परिमार्जन किया जा सकता है |

व्यक्तित्व

व्यक्तित्व = Persona (मुखौटा) – लेटिन भाषा का शब्द

- प्राचीन समय में बाह्य रूप – रेखा के आधार पर व्यक्तित्व को परिभाषित किया जाता था , लेकिन आज परिभाषा बदल चुकी है |
- वर्तमान समय में बाह्य व आंतरिक गुणों के समावेश को व्यक्तित्व कहा जाता है |
- ऑलपोर्ट के अनुसार :- व्यक्तित्व उन मनोदैहिक व्यवस्थाओं का गव्यात्मक संगठन है जो वातावरण के साथ समायोजन स्थापित कर लेता है |
- वेलेन्टाईन के अनुसार :- व्यक्तित्व जन्मजात व अर्जित प्रवृतियों का योग है |
- वुडवर्थ के अनुसार :- व्यक्तित्व व्यक्ति की सम्पूर्ण गुणात्मकता है |

व्यक्तित्व का वर्गीकरण

पाश्चात्य दृष्टिकोण में

क्रेचमर के अनुसार :- क्रेचमर ने शारीरिक संरचना के आधार पर व्यक्तित्व का वर्गीकरण किया है |

	प्रकार		अंग्रेजी नाम
1.	स्थूलकाय – नाटे व्यक्ति	-	पिकनिक
2.	सुडोलकाय – खिलाड़ी प्रवृति वाले व्यक्ति	-	एथलेटिक
3.	क्षीणकाय – दुर्बल शरीर वाले	-	एस्थेनिक
4.	मिश्रित – मिले जुले	-	डिसप्लास्टिक

शैल्डन के अनुसार :- शैल्डन ने भी शारीरिक सरंचना के आधार पर व्यक्तित्व का वर्गीकरण किया है |

	प्रकार	अंग्रेजी नाम
1.	गोलाकार	एंडोमार्फिक
2.	आयताकार	मेसोमार्फिक
3.	लम्बाकार	एंटोमार्फिक

स्प्रें गर के अनुसार :- स्प्रेंगर ने समाज शास्त्रीय आधार पर व्यक्तित्व को छ : भागों में वर्गीकृत किया है |

1. सेद्धान्तिक प्रवृति वाले
2. सामाजिक प्रवृति वाले
3. राजनेतिक प्रवृति वाले
4. सोन्दर्यात्मक प्रवृति वाले
5. आर्थिक प्रवृति वाले
6. धार्मिक प्रवृति वाले

जुंग / युंग के अनुसार – जुंग के द्वारा किया गया वर्गीकरण वर्तमान समय में सबसे अधिक प्रसिद्ध माना जाता है | इन्होने मनोवैज्ञानिक आधार पर व्यक्तित्व का वर्गीकरण किया है |

	वर्गीकरण	विशेषता
1.	अन्तर्मुखी	एकांत प्रिय, कम बोलने वाला
2.	बहिर्मुखी	सामाजिक, बोलने वाला
3.	उभयमुखी	उपरोक्त दोनों का मिश्रण

भा रतीय दृष्टिकोण से व्यक्तित्व का वर्गीकरण -

1. सतोगुण :- सर्वगुण संपन्न ईश्वर व धर्म में
2. रजोगुण :- कुछ गुण व कुछ अवगुण कर्म में
3. तमोगुण :- दुष्ट प्रवृति , राक्षस प्रवृति ,अवगुण ही अवगुण ,सुख प्राप्ति वाली

आधुनिक दृष्टिकोण से व्यक्तित्व का वर्गीकरण

1. भावुक

2. कर्मशील
3. विचारशील

मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत

प्रवर्तक – सिग्मण्ड फ्रायड

❖ **सिग्मण्ड फ्रायड ने मन की तीन दशाएं बताई है –**

1. चेतन मन – 1/10 भाग - मस्तिष्क से जागृत अवस्था
2. अचेतन मन – 9/10 भाग - कटु अनुभूतियों,दुखद बातों व अतृप्त इच्छाओ का भंडार
3. अर्धचेतन मन – चेतन व अचेतन के बीच की अवस्था

❖ **सिग्मण्ड फ्रायड ने व्यक्तित्व सरंचना की दृष्टि से तीन अवस्थाएं बताई है –**

1. इड (इदम) - सुखवादी सिद्धांत, अनैतिक व अपराधकारी इच्छाओं का भंडार | इड का सम्बन्ध अचेतन मन से है ,यह अवस्था व्यक्ति को कुसमायोजित कर सकती है |
2. इगो (अहम) - वास्तविक सिद्धांत व्यक्तित्व का कार्यपालक ,इड व सुपर इगो के बीच संतुलन का कार्य ,समायोजन की अवस्था , इसका सम्बन्ध चेतन मन से है |
3. सुपर (इगो परम अहम) - आदर्शवादी सिद्धांत , आध्यात्मिकता की ओर रुझान ,नैतिक व आदर्शवादी बातें , आदर्शों की अधिकता व्यक्ति को कुसमायोजित कर सकती है |

❖ **ओडिपस व एलेक्ट्रा ग्रंथि - सिग्मण्ड फ्रायड के अनुसार लडकों में ओडिपस ग्रंथि होने के कारण वे अपनी माता से** अधिक प्यार करते है तथा लड़कियों में एलेक्ट्रा ग्रंथि होने के कारण वे अपने पिता से अधिक प्यार करती है |

❖ **सिग्मण्ड फ्रायड ने दो मूल प्रवृति बताई है –**

1. जीवन मूल प्रवृति
2. मृत्यु मूल प्रवृति

❖ **स्वमोह (निर्सिजिज्म)** – अपने आप में मस्त रहने व अपने आप से प्यार करने की क्रिया को निर्सिजिज्म कहते है |

❖ **लिबोड़ो - सिग्मण्ड फ्रायड ने कम प्रवृति को लिबोड़ो कहा है | यह एक स्वाभाविक प्रवृति होती है और यदि इस** प्रवृति का दमन करने की कोशिश की जाती है तो व्यक्ति कुसमायोजित हो जाता है |

❖ **शैशव कामुकता – शैशव कामुकता की बात से सिग्मण्ड फ्रायड व उनके शिष्य जुंग के बीच मतभेद हो जाता है तथा** मतभेद के उपरांत जुंग एक अलग सिद्धांत का प्रतिपादन करते है, जिसका नाम है – **विश्लेषणात्मक सिद्धांत**

व्यक्तित्व मापन की विधियाँ

I. प्रक्षेपण विधियाँ

- प्रक्षेपण शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग सिग्मण्ड फ्रायड के द्वारा किया गया | प्रक्षेपण का अर्थ होता है – अपनी बातों ,विचारो व भावनाओं आदि को स्वयं न बताकर किसी अन्य उद्दीपक या पदार्थ के माध्यम से अभिव्यक्त करना |
- प्रक्षेपण विधियों के माध्यम से अचेतन मन की बातों को ज्ञात किया जाता है |

1. प्रासंगिक अन्तर्बोध परीक्षण / कथा प्रसंग परीक्षण (TAT –Thematic Apperception Test)

- निर्माण – मॉर्गन एवं मुर्रे ने 1935 में
- कुल कार्ड – 30+1=31
- चित्रों से संबधित कुल कार्ड = 30
- खाली कार्ड = 1

❖ इस परीक्षण में 10 कार्ड पर पुरूषों से सम्बंधित, 10 कार्ड पर महिलाओं से सम्बंधित तथा बाकि 10 कार्ड पर दोनों से सम्बंधित चित्र बने होते है |

❖ व्यक्ति को चित्र दिखाकर कहानी लिखने को कहा जाता है | प्रत्येक चित्र अलग – अलग परिस्थिति को प्रदर्शित करता है | कम से कम 20 चित्रों पर कहानी लिखवाई जाती है |

❖ यह परीक्षण व्यक्तिगत व सामूहिक दोनों रूपों में किया जा सकता है तथा 14 वर्ष से अधिक आयु वालों के लिए विशेष उपयोगी है |

2. बाल – सम्प्रत्यक्ष परीक्षण (CAT – Children Apperception Test)

- निर्माण – ल्योपोल्ड बैलोक 1948 में
- विकास – डॉ. अरनेस्ट क्रिस

❖ इस परीक्षण में 10 कार्ड पर जानवारों के चित्र बने होते है बालक को चित्र दिखाकर कहानी लिखने को कह जाता है |

❖ यह परीक्षण भी व्यक्तिगत व सामूहिक दोनों रूपों में प्रयोग किया जा सकता है तथा 3 से 11 वर्ष के बालकों के लिए विशेष उपयोगी है |

3. रोर्शा स्याही धब्बा परीक्षण (IBT – Ink Blot Test)

- निर्माण – हरमन रोर्शा 1921 में
- इस परीक्षण में 10 कार्ड पर स्याही के धब्बे बने होते है | 5 कार्ड पर काले व सफेद तथा 5 पर विभिन्न रंगों के धब्बे बने होते है |
- बालक को धब्बा दिखाकर आकृति के बारे में पूछा जाता है | यह परीक्षण व्यक्तिगत रूप से किसी भी आयु वर्ग पर प्रयोग किया जा सकता है |

4. वाक्य पूर्ति परीक्षण (SCT – Sentence Completion Test)

- निर्माण – 1930 में पाइन एवं टेण्डलर ने
- इस दिशा में सबसे महत्वपूर्ण कार्य रोटर्स ने किया |
- इस परीक्षण में अधूरे वाक्यों को पूरा करने के लिए कहा जाता है |

  जैसे – मैं बहुत खुश होता जब .....?

  मेरे मित्र अक्सर .....|

5. स्वतन्त्र शब्द साहचर्य परीक्षण (FWAT- Free Word Association Test)

- निर्माण – 1879 में गोल्टन ने

  इस परीक्षण के द्वारा व्यक्तित्व मापन के अलावा कई मानसिक रोगों का इलाज भी किया जाता है |

II. अन्य विधियाँ / अप्रक्षेपी

आत्मनिष्ठ या व्यक्तिगत विधियाँ

1. आत्मकथा विधि / अंतर्दर्शन विधि

- प्रवर्तक – विलियम वुन्ट व उनके शिष्य टिचनर
- यह एक प्राचीनतम विधि है ,इसमे व्यक्ति स्वयं के बारे में लिखता है | वैज्ञानिक विधि न होने के कारण आक इसका प्रयोग बहुत कम किया जाता है |

2. व्यक्ति इतिहास विधि / जीवनवृत विधि / केस स्टडी

- प्रवर्तक – टाईडमैंन
- यह निदानात्मक अध्ययनों की सर्वश्रेष्ठ विधि है |
- यह असामान्य बालकों के निदान की सर्वश्रेष्ठ विधि है |

❖ समस्या के कारण को जानना निदान कहा जाता है जो की मनोविज्ञान की सहायता से किया जाता है |

❖ समस्या के कारण को दूर करना उपचार कहलाता है जो की शिक्षा की सहायता से किया जाता है , बिना निदान के उपचार संभव नहीं है |

3. प्रश्नावली विधि / व्यक्तित्व अनुसूची

✍ सर्वप्रथम वुडवर्थ ने Personal Data इन्वेंन्ट्री / शीट का निर्माण किया |

❖ प्रश्नावली में आमने – सामने होना जरुरी नहीं होता है, इसमे उत्तर के रूप में दो या तीन विकल्प होते है |
जैसे – हाँ, नहीं या कभी नहीं

प्रश्नावली के प्रकार

i. **बंद या प्रतिबंधित प्रश्नावली** – **इसमे प्रश्नों के उत्तर हाँ या नहीं या दिए गए 4 विकल्पों में से किसी एक पर सही का** निशान लगाकर देने होते है |

ii. **खुली प्रश्नावली** – **इसमे प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक व स्वतंत्रतापूर्वक देने होते है |**

iii. **चि त्रित प्रश्नावली** – **इसमे चित्रों के माध्यम से पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देने होते है |**

iv. **मि श्रित प्रश्नावली** – **उपरोक्त सभी का मिला - जुला रूप |**

4. साक्षात्कार

❖ इसकी शुरूआत अमेरिका में हुई |

❖ साक्षात्कार में आमने सामने होना जरुरी होता है, इसमे प्रश्नों का कोई बंधन नहीं होता है और न ही कोई समय सीमा निश्चित होती है |

❖ साक्षात्कार को वार्तालाप का एक रूप माना जाता है |

सा क्षात्कार के प्रकार –

i. **नि र्देशित साक्षात्कार** – इस प्रकार के साक्षात्कार में प्रश्नों की भाषा, समय, तरीका आदि पहले से ही निश्चित होते है | यह सुनिश्चित व सुनियोजित तरीके से लिया जाने वाला साक्षात्कार है |

ii. **अनिर्देशित साक्षात्कार** – इसे गहन निदानात्मक व केन्द्रित साक्षात्कार भी कहते है | इसमें प्रश्नों की भाषा, समय, तरीका आदि पहले से निश्चित नहीं होते है | इसकी प्रवृति लचीली होती है व इसमे सामने वाले को स्वतन्त्र अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान किये जाते है |

iii. **समाहारक साक्षात्कार** – यह उपरोक्त दोनों का मिला जुला रूप तथा साक्षात्कार की सर्वश्रेष्ठ व वैध विधि है |

वस्तुनिष्ठ विधियाँ

1. निरीक्षण विधि / बहिर्दर्शन विधि / सर्वभौमिक विधि

- प्रवर्तक वाटसन
- ❖ इस विधि में सामने वाले व्यक्ति के व्यवहार का भिन्न भिन्न परिस्थितियों में अध्ययन करके निष्कर्ष निकला जाता है कि व्यक्ति का व्यक्तित्व कैसा है |

2. समाजमिति विधि

- प्रवर्तक जे.एल.मोरेनो
- ❖ इस विधि में व्यक्ति की सामाजिकता के बारे में समाज के व्यक्तियों से जानकारी लेकर निष्कर्ष निकाला जाता है कि व्यक्ति का व्यक्तित्व कैसा है |

3. क्रम निर्धारण विधि / रेटिंग स्केल

- प्रवर्तक थस्टर्न
- ❖ इस परीक्षण में कर्म निर्धारण मापनी के माध्यम से आकडे एकत्रित करके निष्कर्ष निकाला जाता है कि व्यक्ति का व्यक्तित्व कैसा है |

4. शारीरिक परीक्षण –

- ❖ इस परीक्षण में व्यक्ति की शारीरिक जाँच करके निष्कर्ष निकाला जाता है कि निर्धारित नौकरी के लिए वह स्वस्थ है या नहीं |

समायोजन

❖ मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान

- सर्वप्रथम मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान शब्द का प्रयोग क्लिफोर्ड बियर्स ने 1908 में अपनी पुस्तक A Mind That Found Itself के अंतर्गत किया | इसी पुस्तक के परिणामस्वरूप अमेरिका की स्थापना की गई |
- ❖ इसके मुख्य रूप से तीन कार्य थे –

1. मानसिक स्वास्थ्य की रक्षा
2. मानसिक रोगों की रोकथाम

3. मानसिक रोगों का उपचार

❖ मानसिक स्वास्थ्य

- मानसिक स्वास्थ्य से तात्पर्य रोगों एवं दोषों के अभाव तथा मानसिक विकृतियों के बचाव से है |
- जो व्यक्ति मानसिक रूप से स्वस्थ होते है , उनके व्यवहार में संयम, संतुलन व एकरूपता तथा निर्णय करने की क्षमता पाई जाती है |
- इसके विपरीत जो व्यक्ति मानसिक रूप से अस्वस्थ होते है, वे हमेशा तनाव, चिंता, कुण्ठा आदि के शिकार होते है | उनमे आकांक्षा की कमी पाई जाती है तथा वे गिरगिट की तरह रंग बदलते है |

❖ समायोजन

- समायोजन की प्रक्रिया से तात्पर्य व्यक्ति की आवश्यकताएं व उनको पूरी करने वाली परिस्थितियों के बीच तालमेल स्थापित करने से है |
- जो व्यक्ति इन दोनों के बीच तालमेल स्थापित नहीं कर पाता है ऐसा व्यक्ति तनाव, चिंता, कुण्ठा आदि का शिकार होकर असामान्य व्यवहार करने लगता है, इसी असामान्यता की स्थिति को कुसमायोजित अथवा मानसिक रोगग्रस्तता कहते है |

❖ मानसिक रोग

1. **तनाव** – जब व्यक्ति समय, परिस्थिति तथा आवश्यकता अनुसार कार्य नही कर पाता तथा असफल हो जाता है तो वह तनाव का शिकार हो जाता है |
2. **दुश्चिंता** – **जब अचेतन मन में दमित इच्छा चेतन में आने का प्रयास करती है तो व्यक्ति दुश्चिंता का शिकार हो जाता है** |
3. **दबाव** - सफलता व असफलता तथा आत्मसम्मान की रक्षा के समय दवाब उत्पन्न होता है |
4. **भग्नाशा या कुण्ठा** – **बार-बार प्रयत्न करने के बावजूद भी जब व्यक्ति असफल हो जाता है तो वह निराश हो जाता** है , इसी निराशा को मनोवैज्ञानिक भाषा में भग्नाशा या कुण्ठा कहते है |
5. **द्वंद्व या संघर्ष** – **जब एक साथ दो अवसर उपस्थित हो जाते है और किसी एक का चयन करना होता है तो मस्तिष्क** में द्वंद्व या संघर्ष उत्पन्न हो जाता है |

मानसिक मनोरचनाएँ / समायोजन तंत्र / आत्मसुरक्षा अभिक्रिया

रक्षात्मक युक्तियाँ / प्रतिरक्षण प्रणालियाँ / रक्षा कवच

मानसिक मनोरचनाएँ वे साधन है जिनको व्यक्ति तनाव, चिंता, कुण्ठा आदि से बचने या उनके साथ समायोजन करने के लिए उपाय के रूप में अपनाता है |

प्रत्यक्ष उपाय

1. बाधाओं को दूर करना |
2. अन्य मार्ग खोजना |
3. लक्ष्य का प्रतिस्थापन |
4. विश्लेषण एवं निर्णय |

अप्रत्यक्ष उपाय

1. दमन
2. शमन
3. प्रक्षेपण
4. प्रतिगमन
5. पृथक्करण
6. आश्रित होना
7. विस्थापन
8. तादात्मिकरण
9. दिवास्वपन / मन तरंग / कल्पना प्रवाह
10. औचित्य स्थापन / युक्तिकरण / तर्क संगतिकरण
11. विपरीत रचना / मार्गान्तीकरण / शुद्धिकरण / उदातीकरण
12. शोधन

1. **दमन** – कटु अनुभुतिओं, दुखद बातों व अतृप्त इच्छाओं को बलपूर्वक भुला देना दमन कहलाता है |

2. **शमन** – कष्टदायी बातों का जानबूझकर चेतन अस्वीकरण शमन कहलाता है |

   जैसे – दूध उबलने से झड़प हो जाने पर यह कहना कि छोडो हुआ सो हुआ |

3. **प्रक्षेपण** – अपनी असफलता का दोष किसी पर भी लगा कर अपने आप को संतुष्ट कर देना | जैसे -

i. नाच न जाने आँगन टेढ़ा |

ii. एक क्रिकेट खिलाड़ी बार–बार अपने बल्ले की तरफ यह संकेत देता है कि उसके ठीक प्रकार से न खेलनें का कारण उसका ये बेकार सा बल्ला है |

4. **प्रतिगमन** – जो वर्तमान स्थिति व्यक्ति को तनाव देती है उससे बचने के लिए अपनी पूर्व स्थिति की ओर लौट आना प्रतिगमन कहलाता है | जैसे –

i. एक व्यस्क का बच्चे की तरह फुट-फुट कर रोना |

ii. एक लड़की का वापस अपने पीहर आकर अपनी माँ की गोद में सिर रखकर सो जाना |

5. **पृथक्करण** – जो स्थिति व्यक्ति को तनाव देती है उस स्थिति से अपने आप को अलग कर लेना | जैसे –

i. साथियों द्वारा परेशान किये जाने पर अपना स्थान बदल लेना |

ii. घर में लड़ाई झगड़ा होने पर थोड़ी देर के लिए उठ कर बाहर चले जाना |

6. **आश्रित होना** – कर्महीन व्यक्ति पूरी तरह दूसरों पर निर्भर होकर समायोजित स्थापित करता है तथा एक असफल व्यक्ति पूरी तरह से सफल व्यक्ति पर निर्भर होकर समायोजन स्थापित करता है |

7. **विस्थापन** – अपने आक्रोश को किसी ऐसे व्यक्ति या वस्तु पर अभिव्यक्त करना जो कमजोर हो तथा जिससे आक्रमण की उम्मीद ना हो | जैसे-

i. अध्यापक द्वारा डांट पड़ने पर घर आकर अपने छोटे भाई-बहिनों को पीटना |

ii. माता-पिता द्वारा मार पड़ने पर बगीचे में फूलों को तोड़-तोड़ कर फेंकना |

8. **तादात्मिकरण / आत्मीकरण** - समायोजन स्थापित करने के लिए व्यक्ति अपना परिचय किसी ऐसे व्यक्ति कर साथ ताल-मेल स्थापित करके देता है, जिसे समाज में कोई पद या प्रतिष्ठा प्राप्त होती है तथा ऐसे व्यक्ति के गुणों व अवगुणों का अनुसरण करने लगता है |

9. **दिवास्वपन** – हकीकत में जिन इच्छाओं की पूर्ति नहीं हो पाती, कल्पना के माध्यम से उन इच्छाओं की पूर्ति कर क्षणिक संतुष्टि प्राप्त कर लेना | जैसे-

i. जिनकी शादी नहीं होती वह कल्पना में दूल्हा बना बैंड-बाजे की धुन पर नाच रहा होता है |

ii. कार की इच्छा पूरी न होने पर व्यक्ति कल्पना में गाड़ी पर घूमकर अपमी प्रेमिका के साथ लोगो की सलामी ले रहा होता है |

10. **औचित्य स्थापन** – किसी भी कारण से जो पद या वस्तु प्राप्त नहीं हो पाती है,उसी में दोष निकालकर समायोजन स्थापित करना तथा अपनी दयनीय स्थिति को उचित बताना | जैसे – अंगूर खट्टे , नींबू मीठे |

11. **विपरीत रचना / मार्गान्तीकरण / शुद्धिकरण / उदातीकरण** – कभी-कभी व्यक्ति की इच्छाए व आवश्यकताएं इस प्रकार की होती है कि उन्हें सामाजिक रूप से व्यक्त करना व्यक्ति के हित में नहीं होता इससे उसके सम्मान को ठेस पहुँचने का खतरा होता है, इस लिए व्यक्ति विपरीत रचना रचकर समायोजन स्थापित करता है | जैसे –

i. एक सौतेली माँ अपनी सौतेली बेटी के प्रति नफ़रत को अपने अन्दर बंद करती है तथा इसके विपरीत प्यार का प्रदर्शन करती है |

ii. बुजुर्गों के प्रति सम्मान भावना नहीं होने पर भी सम्मान प्रकट करना |

12. **शोधन** – असामाजिक प्रवृतियों को सामाजिक प्रवृतियों में परिवर्तित कर समायोजन स्थापित करना | जैसे –

i. एक बालक जो लड़ाई-झगडा करता है तथा निर्भीक व बहादुर, उसका खिलाड़ी, मुक्केबाज, या पहलवान आदि के रूप में प्रतिष्ठित होना |

ii. तुलसीदास जी की अपनी पत्नी रत्नावती के प्रति आशक्ति ,राम आशक्ति में बदलना व राम चरित मानस लिखना |

क्षतिपूर्ति उपाय -

जिस क्षेत्र में व्यक्ति कमजोर है उसकी क्षतिपूर्ति किसी अन्य क्षेत्र या साधन के माध्यम से कर समायोजन स्थापित करना | जैसे –

i. शारीरिक रूप से विकलांग बालक कक्षा में प्रथम स्थान लाकर समायोजन स्थापित करता है |

ii. कम लम्बाई वाली लड़की ऊँची सेंडिल पहनकर समायोजन स्थापित करती है |

आक्रामक उपाय -

अपने क्रोध को हिंसात्मक तरीके से अभिव्यक्त करना आक्रामकता कहलाती है | यह दो प्रकार कई होती है – रक्षक व भक्षक

किसी के अनुचित व्यवहार व असामाजिक तत्वों के प्रति आक्रामक रुख अपनाकर अपनी रक्षा करने में कंही कोई बुराई नहीं है लेकिन अनावश्यक रूप से किसी को चोट पहुँचाना व उसका शोषण करना उचित नहीं है ,इससे अपराध भावना का जन्म होता है तथा क्रोध के वशीभूत व्यक्ति भक्षक बनकर केवल दुसरो का ही नुकसान नहीं करता अपितु स्वयं का भी नुकसान करता है |

समायोजन प्रतिमान -

- सिगमण्ड फ्राण्ड के अनुसार – अचेतन मन, इगो व लिबिड़ो प्रवृति समायोजन का आधार है |
- एडलर के अनुसार – श्रेष्ठता प्राप्ति समायोजन का आधार है |
- दिल (भावना) व दिमाग (विचार) में संतुलन बनाये रखना ही आत्मसिद्धि है |

स्वप्न -

- सिगमण्ड फ्राण्ड के अनुसार – स्वप्न अचेतन मन का प्रतिरूप है |
- एडलर के अनुसार – स्वप्न चेतन मन का प्रतिरूप है |
- जुंग के अनुसार – स्वप्न, चेतन, अचेतन व अर्द्धचेतन तीनो का प्रर्तिरूप है |
- नोट - सिगमण्ड फ्राण्ड के विचारों को प्रमुखता दी जाती है |

⇒ एडलर के अनुसार स्वप्न चेतन मन का प्रतिरूप है।

⇒ युंग के अनुसार स्वप्न, चेतन, अचेतन व अर्द्धचेतन तीनो का प्रतिरूप है।

Note:- सिग्मण्ड फ्रॉयड के विचार को प्रमुखता दी जाती है।

शिक्षार्थी का विकास
(Development of the learner)

अभिवृद्धि व विकास में अन्तर:-

	अभिवृद्धि	विकास
1.	संकुचीत अर्थ	व्यापक अर्थ
2.	बाह्य स्वरूप	बाह्य व आन्तरिक स्वरूप
3.	केवल शारीरिक पक्ष में होने वाला परिवर्तन	सम्पूर्ण पक्षो मे होने वाला परिवर्तन
4.	कुछ समय पश्चात रूक जाना	जीवनपर्यन्त चलना
5.	केवल आकार बढ़ने से सम्बध	सम्पूर्ण परिवर्तनो से सम्बध

6.	सीधे नापा तौला जा सकता है।	सीधे मापन संभव नही
7.	परिणात्मक / संख्यात्मक मात्रात्मक	परिमाणात्मक व गुणात्मक
8.	रचनात्मक परिवर्तन	रचनात्मक व विनाशात्मक परिवर्तन
9.	विवृद्धि सूचक	विवृद्धि व ह्रास सूचक

⇒ श्रीमती हरलॉक ने विकास क्रम मे होने वाले परिवर्तनो को चार भागो में बाँटा।

1. आकार मे परिवर्तन
2. अनुपात मे परिवर्तन
3. पुराने चिन्हो का लोप
4. नवीन चिन्हो का उदय

विकास के नियम :-

1. समान प्रतिमान का नियम :-
विकास समान नियमो पर आधारित होता है इसमे किसी प्रकार का भेदभाव नही होता।
2. क्रमबद्धता का नियम / निश्चित श्रृंखला का नियम :-
विकास क्रमानुसार होता है।

3. सतत् विकास का नियम / निरन्तरता का नियम :-

विकास जीवन पर्यन्त चलता रहता है।

4. परस्पर सम्बद्ध का नियम :-

विकास के चारो पक्ष (क्रम- 1) शारीरिक 2) मानसिक 3) सामाजिक व 4) संवेगात्मक) परस्पर सम्बन्धित होते है लेकिन घनिष्ठ सम्बद्ध शारीरिक व मानसिक विकास में होता है।

5. सामान्य से विशिष्ट क्रियाओ का नियम :-

शिशु पहले सामान्य क्रियाए करता है व उसके बाद विशिष्ट

6. निश्चित दिशा का नियम / मस्तकोधमुखी नियम :-

विकास हमेशा सिर से पैर की ओर होता है।

7. व्यक्तिगत विभिन्नता का नियम :-

जन्म से ही कोई बालक प्रतिभाशाली होता है, कोई सामान्य बुद्धि का होता है तो कोई मन्द बुद्धि होता है

8. विकास की गति में भिन्नता का नियम :-

प्रतिभाशाली बालक का विकास तीव्र गति से। सामान्य बुद्धि बालक का सामान्य गति से व मन्द बुद्धि बालक का विकास मन्द गति से होता है।

9. अन्तःक्रिया का नियम :- देखकर, सुनकर व अनुकरण से सिखना।

10. निकट-दूर नियम :- विकास केन्द्र (मस्तिष्क) से सिरो (शरीर के भाग) की ओर होता है।

11. वर्तुलाकार का नियम :- विकास केन्द्र केवल लम्बाई मे ना होकर चारो ओर होता है।

12. वंशानुक्रम व वातावरण के गुणनफल का नियम :- व्यक्ति के किस विकास पर वंशानुक्रम व वातावरण दोनो का प्रभाव पड़ता है।

व्यक्ति का विकास इन दोनो का प्रतिफल है।

व्यक्ति = H (वंशानुक्रम) $\times$ E (वातावरण)

विकास की अवस्थाएँ

1. शैशवावस्था :- जन्म से 6 वर्ष तक
2. बाल्यावस्था :- 7-12 वर्ष तक
3. किशोरावस्था :- 13-18 वर्ष तक
4. प्रौढ़ावस्था :- 18 के बाद

शैशवावस्था :-

शैशवावस्था को निम्न नामों से जाना जाता है।

1. जीवन का सबसे महत्वपूर्ण काल।
2. भावी जीवन की आधारशिला।
3. सीखने का आदर्श काल।
4. खिलौनो की आयु।
5. सीखने की आयु।
6. संस्कारो के निर्माण की अवस्था।
7. अमूर्तिक चिन्तन की अवस्था।
8. प्रिय लगने वाली अवस्था।
9. मन की मौजो मे विचरण करने की अवस्था।
10. पराधिनता की अवस्था।
11. पूर्व विद्यालयी आयु / नर्सरी स्कूल की आयु।

शैशवावस्था के अवस्था के विकासात्मक कार्य व विशेषताएँ :-

Note:- सर्वप्रथम विकासात्मक कार्य का सम प्रत्यय हैविगहर्स्ट के द्वारा दिया गया।

शारीरिक व मानसिक विकास तीव्र गति से।

1. सिखने की प्रक्रिया मे तीव्रता।
2. जिज्ञासा प्रवृति।
3. अनुकरण द्वारा सिखना।
4. दुसरो पर निर्भर।
5. दुसरी शिशुओ के प्रति रूची।
6. दोहराने की प्रवृति।
7. संवेगो का प्रदर्शन।

मूल प्रवृत्यात्मक व्यवहार।
नैतिक व सामाजिक भावना का अभाव।
न तो सामाजिक और न असामाजिक।
एक या दो मित्र व क्षणिक मित्रता।
स्वार्थी व स्वकेन्द्रित।
अपनी संवेदनाओ (ज्ञानेन्द्रियो) व शारीरिक क्रियाओं के माध्यम से सिखना।
काम प्रवृति (सिग्माण्ड फ्रायड के अनुसार)
सीमित मात्रा मे कल्पना।

7-12 वर्ष का काल

बाल्यावस्था :-

बाल्यावस्था को निम्न नामो से जाना जाता है।
निर्माणकारी काल।
अनोखा काल।
प्रारम्भिक विद्यालय की आयु।
शैक्षिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण काल।
विचारिक क्रिया अवस्था।
गैंग आयु (टोली / दल / समुह की आयु)
मिथ्या मिथ्या / छदम परिपक्वता का काल।
प्रतिद्वन्द्वात्मक सामाजीकरण का काल।
खेल की आयु।
मुर्तचिन्तन की अवस्था आदि।
(प्रत्यक्ष)

बाल्यावस्था के विकासात्मक कार्य व विशेषताएँ :-

शारीरिक व मानसिक विकास मे स्थिरता।
जिज्ञासा प्रवृति का विकास।
यथार्थवादी दृष्टिकोण।

4. रचनात्मक प्रवृत्ति का विकास।
5. निरउद्देश्य भ्रमण करने की प्रवृत्ति।
6. संग्रह करने की प्रवृत्ति।
7. चोरी करना व झूठ बोलना।
8. भाई-बहिनो मे झगड़ा।
9. प्रंशसा पाने की इच्छा।
10. हिन भावना का शिकार।
11. प्रतिस्पर्द्धा की भावना।
12. पक्षपात की भावना का शिकार।
13. संवेगो पर नियन्त्रण।
14. नैतिक व सामाजिक भावना का विकास।
15. संवेगात्मकता मे सामाजिकता का विकास।
16. जाति भेद, अर्थ भेद व लिंग भेद।
17. समलिंगिय समूह भावना।
18. नेता बनने की इच्छा।
19. खोखली मिश्रता।
20. भाषा एंव सम्प्रेषण योग्यता का विकास।
21. खेलो मे रूची।
22. मूर्त चिन्तन की योग्यता आदि।

किशोरावस्था (Adolesence)

13 - 18 वर्ष तक

किशोरावस्था पर क्रमबद्ध व व्यवस्थित अध्ययन अमेरिका के प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक स्टैनली हॉल के द्वारा किया गया। इन्होने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक Adolescence (एडोलसेन्स) के अन्तर्गत 1904 मे किशोरावस्था के एक सिद्धान्त का प्रतिपादन किया।

किशोरावस्था के सिद्धान्त :-

1. त्वरित विकास का सिद्धान्त :-
प्रवर्तक - स्टेनली हॉल
इस सिद्धान्त के अनुसार किशोरावस्था में विकास अकस्मात होता है।

2. क्रमिक विकास का सिद्धान्त :-
प्रवर्तक :- थार्नडाइक बहॉलिंगवर्थ
इस सिद्धान्त के अनुसार किशोरावस्था में विकास अकस्मात न होकर धीरे- 2 अर्थात् क्रमानुसार होता है।

किशोरावस्था को मुख्य रूप से दो भागों में बाँटा गया है :-

1. पूर्व किशोरावस्था [Early Adolescence]
वयः सन्धि

2. उत्तर किशोरावस्था / परिपक्वावस्था [Later Adolescence]
[Maturity] - 16-18 वर्ष

किशोरावस्था को निम्न नामों से जाना जाता है :-

1. जीवन का सबसे कठिन काल।
2. आँधी तुफान की अवस्था।
3. तनाव संघर्ष की अवस्था।
4. उथल-पुथल व झंझावत की अवस्था।
5. समस्याओं की आयु।
6. द्रुत एवं तीव्र विकास की अवस्था।
7. तार्किक चिन्तन की अवस्था।

8. स्वर्णकाल।
9. बसंत ऋतु।
10. परिवर्तन की अवस्था।
11. परिवर्ती अथवा संक्रमण की अवस्था।
12. अस्पष्ट वैचित्रिक स्थिति की अवस्था।
13. विशिष्टता की खोज का समय :-
एरिक्सन ने अहम विशिष्टता की समस्या कहा है।
14. प्रौढावस्था अथवा वयस्क अवस्था की दहलीज।

किशोरावस्था के विकासात्मक कार्य व विशेषताएँ :-

1. बहुमुखी विकास अर्थात् शारीरिक, मानसिक सामाजिक व समायोजन या संवेगात्मक विकास।
2. बुद्धि का अधिकतम विकास।
3. कल्पना का बाहुल्य।
4. व्यक्तिगत व आत्मनिष्ठ मिश्रण।
5. दिवास्वप्न की प्रवृत्ति।
6. वीरपूजा / नायक पूजा की प्रवृत्ति।
7. आत्म सम्मान की महत्व।
8. पीढियों में अन्तर के कारण विचारों में मतभेद।
9. समायोजन का अभाव।
10. मानसिक स्वतन्त्रता व विद्रोह की स्थिति।
11. अपराध प्रवृत्ति का विकास।
12. स्वतंत्र सोच का विकास।
13. ईश्वर तथा धर्म में विश्वास या अविश्वास।
14. समाजसेवा व देशभक्ति की भावना।
15. स्वतंत्र निर्णय क्षमता।

समवयस्क समूह भावना (Peer group)
समलिंगिय व विषमलिंगिय समुह भावना।
नेतृत्व का विकास।
विचारो व संवेगो में परिपक्वता।
अपनो से बिछुड़ने का गम।
संवेगात्मक परिवर्तन तीव्र गति से।
रूचियो में परिवर्तन।
अमूर्त चिन्तन करने की योग्यना।
काम प्रवृति

आत्म प्रेम → समलिंगिय प्रेम → विषमलिंगिय प्रेम

आत्मनिर्भर बनने की इच्छा।
व्यवसाय चुनाव की चिन्ता।
आत्म चेतना की भावना।
स्वपहचान (अपने आप को पहचानना)
आत्म सम्प्रत्य की भावना (अपने आप को पहचानना)
समस्यात्मक बालक।
आत्मनिर्भरता बनाम निर्भरता।
आदर्शवाद बनाम यथार्थवाद।
अध्ययन के प्रति गम्भीर।
विपरित लिंग के प्रति आकर्षण।
मादक पदार्थो का सेवन करने की समस्या।
विनिय समस्या।
आत्महत्या की समस्या।

Most:- विकास के सिद्धान्त

1. संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त - जीन पियाजे
2. संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त :- वाइगोत्स्की
3. मनोलैंगिक विकास सिद्धान्त :- सिगमण्ड फ्रायड
4. मनो सामाजिक विकास सिद्धान्त :- एरिक्सन
5. नैतिक विकास सिद्धान्त :- लॉरेन्स कॉहलबर्ग
6. भाषा विकास सिद्धान्त :- नाम चॉमस्की

Most:- संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त :-

संज्ञानात्मक पक्ष पर क्रमबद्ध व व्यवस्थित अध्ययन स्वीजरलैण्ड के प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक जीन पियाजे द्वारा किया गया।

संज्ञान प्राणी का वह व्यापक और स्थाई ज्ञान है जिसे वह वातावरण (उद्दीपक, जगत) के माध्यम से ग्रहण करता है।

संज्ञान के अन्तर्गत अवधान, चिन्तन, स्मरण, कल्पना, तर्क - वितर्क, निरिक्षण, वर्गीकरण, समस्या समाधान, समप्रत्ययीकरण (विचारों का निर्माण), प्रत्यक्षण (देखना) आदि मानसिक क्रियाएँ सम्मिलित होती है।

ये क्रियाएँ परस्पर अन्तः सम्बन्धित होती है।

⇒ जिन पियाजे ने संज्ञानात्मक पक्ष पर बल देते हुए संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। इसलिए जिन पियाजे को विकासात्मक मनोविज्ञान का जनक माना जाता है।

⇒ विकासात्मक मनोविज्ञान के अन्तर्गत शुक्र से अन्त अर्थात गर्भावस्था से वृद्धावस्था तक होने वाले विकास का अध्ययन किया जाता है।

⇒ बाल विकास के अन्तर्गत गर्भावस्था से किशोरावस्था अथवा परिपक्वता अवस्था तक होने वाले विकास का अध्ययन किया जाता है।

⇒ विकास प्रारम्भ होता है गर्भावस्था से।

⇒ संज्ञान विकास शैशवावस्था से प्रारम्भ होकर जीवन पर्यन्त चलता रहता है।

⇒ जीन पियाजे ने संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त को 4 अवस्थाओं के आधार पर समझाया है।

1. संवेदी पेशीय अवस्था / इन्द्रीय जनीत अवस्था (Sensori ~~motor~~ Motor stage) :- 0-2 वर्ष

जन्म के समय शिशु बाह्य जगत के प्रति अनभिज्ञ होता है धीरे-2 आयु वृद्धि के साथ-2 वह अपनी संवेदनाओं (ज्ञानेन्द्रियों) व शारीरिक क्रियाओं के माध्यम से ज्ञान ग्रहण करता है।

वह वस्तुओं को देखकर सुनकर, स्पर्श करके, गंध के द्वारा व स्वाद के माध्यम से ज्ञान ग्रहण करता है।

⇒ छोटे-2 शब्दों को बोलने लगता है। तथा वस्तु स्थायित्व (Object Permanance) का अभाव पाया जाता है।

2. पूर्व- संक्रियात्मक अवस्था (Pre-Operational stage)

इस अवस्था में शिशु दूसरों के सम्पर्क से, खिलौनों से व अनुकरण के माध्यम से ज्ञान ग्रहण करता है। खिलौनों की आयु इसी अवस्था को कहा जाता है।

⇒ शिशु अक्षर लिखना, गिनती गिनना, रंगों को पहचानना, वस्तुओं को क्रम से रखना, हल्के-भारी का ज्ञान होना, मात-पिता की आज्ञा मानना, पूछने पर नाम बताना, घर के छोटे-छोटे कार्यों में मदद करना आदि सीख जाता है।

⇒ लेकिन वह तर्क- वितर्क करने योग्य नहीं होता। इसलिए इसे अतार्किक चिंतन की अवस्था के नाम से भी जाना जाता है।

⇒ बालक निर्जिव वस्तुओं में सजीव चिन्तन करने लगता है इसे जीववाद कहते हैं।

⇒ वस्तु स्थायित्व का भाव जागृत हो जाता है।

⇒ प्रतिकात्मक सोच (Symbolic thinking) का विकास हो जाता है।

=) बालक अहमवादी होता है तथा दुसरो को कम महत्व देता है।

अनुत्क्रमशीलता (Irreversibility) पाई जाती है।

3. मूर्त / स्थूल संक्रियात्मक अवस्था (Concrete Opeational Stage) :- 7-12 वर्ष इस अवस्था मे बालक तार्किक चिन्तन करने योग्य हो जाता है लेकिन उसका चिन्तन केवल मूर्त वस्तुओ तक ही सीमित रहता है। वह अपने सामने उपस्थित दो वस्तुओ के बीच अन्तर करना, तुलना करना, समानता व असमानता बताना, सही-गलत व उचित-अनुचित मे विभेद करना आदि सीख जाता है। इसीलिए इसे मूर्त चिन्तन की अवस्था के नाम से भी जाना जाता है।

=) बालक दिन, तारीख, समय, महिना, वर्ष आदि बताने योग्य हो जाता है।

=) भाषा एव सम्प्रेषण योग्यता का विकास हो जाता है।

=) उत्क्रमणशीलता (पलावती अवस्था / Reversibility) पाई जाती है।

4. औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था (Formal opextional stage) :- 12 वर्ष के बाद इस अवस्था में किशोर मूर्त के अलावा अमूर्त चिन्तन करने योग्य भी हो जाता है इसलिए इसे तार्किक चिन्तन की अवस्था के नाम से भी जाना जाता है।

इस अवस्था मे मानसिक योग्यताओ का पूर्ण विकास हो जाता है।

परिकल्पना चिन्तन पाया जाता है।

जीन पियाजे का शिक्षा मे योगदान :-

1. जीन पियाजे ने संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त का प्रतिपादन किया।
2. बाल केन्द्रित शिक्षा पर बल दिया।
3. जीन पियाजे शिक्षण मे शिक्षक की भूमिका को महत्वपूर्ण बताते हुए कहते है कि-
   (i) एक शिक्षक को बालक की समस्या का निदान करना चाहिए।
   (ii) बालको के अधिगम के लिए उचित वातावरण तैयार करना चाहिए।
4. जीन पियाजे ने बुद्धि को जीव विज्ञान के स्कीमा की भांति बताकर बुद्धि की एक नवीन व्याख्या प्रस्तुत की।
5. जीन पियाजे ने आत्मीकरण, समन्जन, संतुलीकरण व स्कीमा जैसे नवीन शब्दो का प्रयोग कर शिक्षा के क्षेत्र मे महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

स्कीमा शब्द जीव विज्ञान से लिया गया है।

स्कीमा :-

वातावरण द्वारा अर्जित सम्पूर्ण ज्ञान का संगठन ही स्कीमा है।

जब व्यक्ति के सामने कोई उद्दीपक उपस्थित होता है तो उसकी सभी मानसिक क्रियाएँ अलग-2 कार्य न करके एक साथ संगठित होकर कार्य करती है।

मानसिक संरचना की व्यवहारगत समान्तर प्रक्रिया जीव विज्ञान मे स्कीमा कहलाती है। अर्थात् किसी उद्दीपक के प्रति विश्वसनीय अनुक्रिया को स्कीमा कहते है।

संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त :-
वाइगोत्स्की द्वारा प्रतिपादित
वाइगोत्स्की का मानना है बालक के संज्ञानात्मक विकास पर सामाजिक कारकों व भाषा का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है इसीलिए इस सिद्धान्त को सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धान्त के नाम से भी जाना जाता है।
वाइगोत्स्की का मानना है कि संज्ञानात्मक विकास अन्तर वैयक्तिक सामाजिक परिस्थिति (Interpersonal Social Sitaiation) में सम्पन्न होता है। अर्थात कुशल व विद्वान व्यक्तियों के साथ अन्तः क्रिया के माध्यम से संज्ञानात्मक विकास होता है। इसीलिए इस सिद्धान्त को समीपस्थ विकास का क्षेत्र भी कहा जाता है। (Zone of Proximal development)

मनोलैंगिक विकास सिद्धान्त :- (Psycho - Sexual development theory) :- सिग्मण्ड फ्रॉयड
सिग्मण्ड फ्रॉयड के अनुसार बालक के विकास पर उसकी काम प्रवृति का व्यापक प्रभाव पड़ता है। उनके अनुसार काम प्रवृति बालक में जन्म से पाई जाती है तथा भिन्न-2 अवस्थाओं में इसका स्वरूप भिन्न 2 होता है।

इस आधार पर सिग्मण्ड फ्रायड ने मनोलैंगिक विकास सिद्धान्त को पाँच अवस्थाओं के आधार पर समझाया है।

1. मुखीय अवस्था (Oral Stage) :- 0-1 वर्ष
इस पहली अवस्था में काम प्रवृति मुख के क्षेत्र में केन्द्रित होती है।

② गुदीय अवस्था : (Anal Stage) :- 1-3 वर्ष

इस अवस्था मे काम प्रवृति गुदा क्षेत्र मे केन्द्रित होती है। इस अवस्था मे शिशु जिद्दी, आक्रामक व धारणात्मक हो जाता है।

③ लैंगिक अवस्था :- (Phallic Stage) :- 3-6 वर्ष

इस अवस्था मे बालक का ध्यान जननांगों की तरफ जाता है। इसी अवस्था मे आडिपस व एलेक्ट्रा ग्रन्थि का विकास होता है।

④ अदृश्यावस्था / प्रसुप्ति अवस्था (Latency Stage)
7-12 वर्ष

इस अवस्था मे काम प्रवृति, अदृश्य हो जाती है यह शरीर के किसी भी भाग मे विद्यमान नही होती।

⑤ जननेन्द्रिय अवस्था (Genital Stage) : 12 के बाद

इस अंतिम अवस्था में काम शक्ति का प्रयोग संतानोत्पति हेतु किया जाता है।

4. मनो-सामाजिक विकास सिद्धान्त (Psycho Social development theory) : एरिक्सन

एरिक्सन को नव्य फ्रायडवादी माना जाता है। क्योंकि एरिक्सन सिग्मण्ड फ्रायड के विचारो से काफी हद तक सहमत थे। लेकिन एक बात पर सहमत

नही थे। एरिक्सन का मानना है कि बालक के विकास पर उसकी काम प्रवृति का नही बल्कि सामाजिक अनुभूतियो का प्रभाव पड़ता है।

इस आधार पर उन्होने मनो-सामाजिक विकास सिद्धान्त को आठ अवस्थाओ के आधार पर समझाया है।

1. 0-2 :- विश्वास की अवस्था।
2. 3-4 :- स्वतन्त्रता सन्देह की अवस्था।
3. 5-6 :- आत्मबल - अपराधभाव की अवस्था।
4. 7-12 :- परिश्रम - हीनता की अवस्था।
5. 13-18 :- पहचान - भूमिका द्वन्द्व की अवस्था।
6. 19-35 :- उत्पादकता निष्क्रियता की अवस्था।
7. 36-55 :- ईमानदारी निराशा की अवस्था।
8. 55 के बाद :- सनिष्ठता अलगाव की अवस्था।

5 नैतिक विकास सिद्धान्त (Moral development theory) लॉरेन कॉहलबर्ग

लॉरेन कॉहलबर्ग का मानना कि बालक के नैतिक विकास को समझने के लिए उसके तर्क व चिन्तन का विश्लेषण करना अनिवार्य है।

इस आधार

पर उन्होंने नैतिक विकास सिद्धान्त की छः अवस्थाएँ बताई है। तथा इन्हे तीन स्तरों मे बाँटा है।

(1) प्री-कन्वेंशनल स्तर / पूर्व परम्परागत स्तर :-
4-10 वर्ष

इस स्तर मे बालक के तर्क व चिन्तन का आधार बाहरी घटना होती है। बालक बाहरी घटना के आधार पर किसी को सही व गलत या उचित व अनुचित बताता है। इस स्तर की दो अवस्थाएँ है।

(1) आज्ञा एवं दण्ड की अवस्था
(2) अहंकार की अवस्था / अदला बदली की अवस्था

(2) कन्वेंशनल स्तर / परम्परागत स्तर :-
10-13 वर्ष

इस स्तर मे बालक के तर्क व चिन्तन का आधार सामाजिक होता है। इस स्तर की दो अवस्थाएँ है।

(1) प्रशंसा की अवस्था
(2) सामाजिक व्यवस्था के प्रति सम्मान की अवस्था या उत्तम लड़का अच्छी लड़की की अवस्था।

(3) पोस्ट कन्वेंशनल / पश्च परम्परा स्तर :-
13 के बाद

इस स्तर मे बालक के तर्क व चिन्तन का आधार विवेक होता है। इसकी दो अवस्थाएं है।

(1) सामाजिक समझौते की अवस्था।
(2) विवेक की अवस्था।

लॉरेन्स कोहलबर्ग ने नैतिक विकास सिद्धान्त की पाँच अवस्थाएँ और बताई है।

1. पूर्व नैतिक अवस्था (Annoral Stage) 0-2 वर्ष
2. स्वकेन्द्रित अवस्था (Self Center Stage) 2-7 वर्ष
3. परम्पराओं को धारण करने वाली अवस्था (Confoeming Comentional Stage) 7-12 वर्ष

इसी अवस्था से बालक का नैतिक अथवा चारित्रिक विकास प्रारम्भ होता है।

4. आधारहीन आत्मचिंतना अवस्था (Irrational Conscien-Cious Stage) 13-18 वर्ष

इस अवस्था मे किशोर आधारहीन व खोखले आदर्शों की बातें करता है। जो उसे वास्तविकता के धरातल से दूर ले जाते है इस अवस्था में किशोरो का व्यक्तित्व सिगमण्ड फ्रॉयड के सुपर ईगो द्वारा संचालित होता है।

इस अवस्था के व्यक्ति के देवदूत (An Angel in a Person) माना जाता है।

5. आधारयुक्त आत्म चेतना अवस्था (Rational Conscien-Cious Stage) 18 के बाद

इस अवस्था मे व्यक्ति की बातें आधारयुक्त व तर्क समत होती है।

व्यक्ति केवल भावनाओ से ही नही बल्कि विचारो से भी काम लेता है।

भाषा विकास

पावलव के अनुसार :-
बालक भाषा अनुबन्धन के माध्यम से सीखता है।

स्किनर के अनुसार :-
बालक भाषा अनुकरण व पुनर्बलन के माध्यम से सीखता है।

अलबर्ट बान्डुरा :-
बालक भाषा अनुकरण के माध्यम से सीखता है।
बान्डुरा ने भाषा विकास मे पुर्नबलन को महत्व नही दिया।

6. **नॉम चॉमस्की का भाषा विकास सिद्धान्त :-**
नाम चॉमस्की का मानना है कि बालक मे भाषा ग्रहण करने की जन्मजात प्रवृति होती है जिसे भाषा अर्जन तंत्र (LAD - Language Acquisition Device) के नाम से जाना जाता है।

- बालक जिस भाषा को सुनता है उसकी व्याकरण को अपने आप सीख जाता है। इसीलिए इस

सिद्धान्त को जेनेरेटिव ग्रामर थ्योरी के नाम से जाना जाता है।

शारीरिक विकास

क्रो या क्रो के अनुसार :-

मनुष्य सर्वप्रथम एक शारीरिक प्राणी है उसकी शारीरिक संरचना उसके व्यवहार व दृष्टिकोण का आधार है अतः शारीरिक विकास के सभी पहलो का अध्ययन करना आवश्यक है।

शारीरिक विकास के चक्र :-

शारीरिक विकास के चार चक्र है।

प्रथम चक्र :- 0-3 वर्ष
विकास तीव्र गति से

द्वितीय चक्र :- 3-12 वर्ष
विकास मंद गति से

तृतीय चक्र :- 13-15 वर्ष
पुनः तीव्र गति से

चतुर्थ चक्र :- 16-18 वर्ष
पुनः मन्द गति से

लम्बाई :-

शैशवस्था मे लड़को की लम्बाई अधिक बाल्यावस्था मे लगभग बराबर और यदि अधिक होती है तो लड़कियो की किशोरावस्था मे लड़को की लम्बाई अधिक।

लड़कियो की लम्बाई 16 वर्ष तक बढ़ती है। जबकि लड़को की लम्बाई 18 वर्ष के बाद भी बढ़ती रहती है।

भार :-

शैशवावस्था मे लड़को का भार अधिक। बाल्यावस्था मे लगभग बराबर और यदि अधिक होता है तो लड़कियो का।

किशोरावस्था मे लड़को का भार अधिक क्योकि लड़को की हड्डियो अधिक मजबुत होती है।

हड्डियाँ :-

शैशवास्था मे हड्डियो की सख्या 270 से 300 के बीच होती है।

ये हड्डिया कोमल तथा लचीली होती है। धीरे-2 ये हड्डियाँ आपस मे जुड़ना प्रारम्भ होती है। इस क्रिया को अस्थिकरण या दृढीकरण की क्रिया कहते है।

किशोरावस्था मे अस्थिकरण की क्रिया पूर्ण हो जाती है तथा हड्डियो की सख्या 206 रह जाती है।

किशोरावस्था मे भुजाओ व टाँगो की हड्डियो मे वृद्धि होती है।

दाँत :-

दाँत निकलने की प्रक्रिया का आरम्भ गर्भावस्था से हो जाता है। जन्म के समय शिशु के दाँत नही होते है। 5वे या छठवे माह से दूध के दाँत निकलना प्रारम्भ हो जाते है।

एक वर्ष में लगभग आठ दाँत तथा 4 वर्ष तक दूध के पूरे 20 दाँत निकल आते हैं। उसके बाद दूध के दाँत गिरना शुरू होते हैं। तथा पाचवें या छठवें वर्ष से स्थायी दाँत निकलना शुरू होते हैं। 12-13 वर्ष तक दोनों की संख्या 24 से 28 होती है।

किशोरावस्था के अंत अथवा प्रौढ़ावस्था के प्रारम्भ में अक्ल दंत (Wisdom teeth) निकलते हैं। इनकी संख्या 4 होती है

स्थाई दाँत = 28
अस्थाई दाँत = 20
कुल दाँत = 32

मस्तिष्क :-

शैशवास्था में मस्तिष्क का भार लगभग 350 ग्राम बाल्यावस्था में 1260 ग्राम किशोरावस्था में 1260-1400 ग्राम के बीच होता है।

धड़कन :-

जन्म के समय शिशु के धड़कन 1 मिनट में लगभग 140 बार 6 वर्ष की आयु तक 100 बार 12 वर्ष की आयु तक 85 बार तथा किशोरावस्था में 72 बार धड़कती है।

Q.1 खिलौनों की आयु
(1) शैशवावस्था ✓
(2) बाल्यावस्था
(3) किशोरावस्था
(4) प्रौढ़ावस्था

Q.2 खिलौनों की आयु
(1) संवेदी पेशीय अवस्था
(2) मूर्त संक्रियात्मक
(3) पूर्व संक्रियात्मक ✓
(4) औपचारिक संक्रियात्मक

Q.3 खिलौनों की आयु
(1) 0-2 वर्ष (2) 2-7 वर्ष ✓
(3) 7-12 वर्ष (4) 12 के बाद

Q.4 खिलौनो की आयु

(1) शैशवावस्था (0-2) (2) पूर्व बाल्यावस्था (2-7)
(3) पूर्व किशोरावस्था (13-15) (4) उत्तरावस्था (16-18)
(5) उत्तर बाल्यावस्था (7-12)

उत्थान समस्या की आयु (परेशानियो की आयु)

बुद्धि (Intelligence)

1885 मे सर्वप्रथम फ्रांसिस गाल्टन के द्वारा बुद्धि शब्द का प्रयोग किया गया।

1890 मे केटल ने पेन्सिलवेलिया विश्वविद्यालय में Mental Test and Measurement (मानसिक परीक्षण व मापन) नामक पुस्तक का प्रकाशन किया।

1890 मे ही केटल ने मानसिक परीक्षण शब्द का प्रयोग किया।

1905 मे सबसे पहला बुद्धिपरीक्षण फ्रांस के निवासी अल्फ्रेड बिने ने साइमन की मदद से तैयार किया जिसका नाम था बिने साइमन बुद्धि परीक्षण।

1908 मे अल्फ्रेड बिने ने मानसिक आयु शब्द का प्रयोग किया।

1912 मे सर्वप्रथम स्टर्न व कुलहमन कुहलमन के द्वारा बुद्धिलब्धी का सुत्र दिया गया।

$$I.Q = \frac{M.A}{C.A} \quad \frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{वास्तविक आयु}}$$

1916 में टरमन के द्वारा बुद्धिलब्धि का संशोधित सूत्र दिया गया।

$$I.Q = \frac{M.A}{C.A} \times 100$$

बुद्धि की विशेषताएँ :—

बुद्धि एक जन्मजात शक्ति अथवा योग्यता है।
बुद्धि एक विकासशील या परिवर्तनशील योग्यता है।
बुद्धि पर वंशानुक्रम व वातावरण दोनों का प्रभाव पड़ता है।
बुद्धि पर मुख्य प्रभाव वंशानुक्रम का पड़ता है तथा वातावरण का प्रभाव केवल 10 बिन्दुओं तक पड़ता है।
लिंगभेद व जाति विशेष पर बुद्धि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
बुद्धि एक इकाई न होकर अनेक इकाइयों का समूह है।
उचित प्रकार से उत्तर देने, तर्क - वितर्क करने चिन्तन करने निरीक्षण करने आदि की योग्यता ही बुद्धि है।
प्रत्येक वातावरण में समायोजन स्थापित कर लेना ही बुद्धि है।
अनुभव से लाभ उठाने की योग्यता ही बुद्धि है।
अमूर्त चिन्तन करने की योग्यता ही बुद्धि है।
बुद्धि की लम्बवत् वृद्धि (Vertical Growth) 16-18 वर्ष तक होती है। जबकि सैद्धिजीय वृद्धि (Horizontal Growth) जीवनपर्यन्त चलती रहती है।

बुद्धि वर्गीकरण :

थार्नडाइक व गैरेट ने बुद्धि के तीन प्रकार बताये है।

मूर्त बुद्धि (Concrete Intelligence / Practical Intelligence) :-

इस बुद्धि को गामक या मोटिंग बुद्धि भी कहते है। इस बुद्धि का सम्बंध यंत्रो और मशीनो से होता है।

2. अमूर्त बुद्धि (Abstruct Intelligence): इस बुद्धि का सम्बंध चिन्हो, प्रतीको व पुस्तकीय ज्ञान से होता है।

3. सामाजिक बुद्धि (Social Intelligence): इस बुद्धि का सम्बंध सामाजिक अनुकूलन शीलता से होता है।

व्यवहारिक बुद्धि को सामाजिक बुद्धि भी कहते है। यदि व्यावहारिक बुद्धि का English नाम Pratical Intelligence दिया हो तो उत्तर मूर्त बुद्धि होगा।

बुद्धि के सिद्धान्त :-

1. एक तत्व सिद्धान्त (Uni factor Theory) [सामान्य तत्व]

प्रवर्तक :- अल्फ्रेड बिने

यह सिद्धान्त मान्य नही हुआ तथा इस सिद्धान्त को निरंकुशवादी सिद्धान्त के नाम से भी जाना जाता है।

2. द्वि-तत्व सिद्धान्त (Two factor Theory)

प्रवर्तक :- स्पीयरमैन

(1) सामान्य तत्व (G) :- जन्मजात
(2) विशिष्ट तत्व (S) :- अर्जित

स्पीयरमैन के अनुसार सामान्य तत्व के सम्पर्क मे जो भी विशिष्ट तत्व जितना अधिक आता है व्यक्ति उसी क्षेत्र मे प्रगति करता है।

बाद मे स्पीयरमैन ने एक और तत्व (समूह तत्व) जोड़ दिया तथा सिद्धान्त कहलाया - द्वि तत्व सिद्धान्त।

3. बहु तत्व सिद्धान्त (Multi factor Theory) :-

प्रवर्तक - थार्नडाइक

थार्नडाइक के अनुसार व्यक्ति जितनी भी मानसिक क्रियाएं करता है उनमे तत्व बुद्धि के अन्तर्गत पायें जाते है।

थार्नडाइक ने अपने सिद्धान्त की तुलना बालु के ढेर से करते हुए ऊंचाई, चौड़ाई, क्षेत्रफल व गति की चर्चा की है। और इस आधार पर सिद्धान्त कहलाया - बालुका सिद्धान्त / परमाणुवादी सिद्धान्त।

4. समुह तत्व सिद्धान्त (Group factor theory) :-

प्रवर्तक :- थर्स्टन

थर्स्टन ने कई कारको का विश्लेषण करने के पश्चात यह निष्कर्ष निकाला कि सात मानसिक योग्यताओ का समूह ही बुद्धि है :-

(1) प्रत्यक्षण योग्यता :- गहराई से देखना
(2) अंक योग्यता
(3) शाब्दिक योग्यता
(4) तार्किक शक्ति
(5) वाक् शक्ति
(6) प्रत्यवेक्षण शक्ति
(7) स्मरण शक्ति

5. प्रतिदर्श सिद्धान्त (Sampline theory):

प्रवर्तक: थॉमसन

थॉमसन के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति में सभी मानसिक योग्यताओं का थोड़ा-2 Sample पाया जाता है।

6. त्रि आयाम सिद्धान्त (Three Diamentional theory)

प्रवर्तक: - गिलफर्ड

त्रि आयाम

(1) संक्रिया / प्रक्रिया

(2) विषय वस्तु / अन्तर वस्तु

(3) उत्पाद / परिणाम

(1) समस्या समाधान के लिए व्यक्ति जिस मानसिक प्रक्रिया से गुजरता है उसे संक्रिया कहते है।

(2) समस्या समाधान के लिए जिस सामग्री की आवश्यकता होती है उसे विषय वस्तु कहते है।

(3) समस्या समाधान के लिए जिस रूप में सूचनाएँ प्राप्त होती है उसे उत्पाद कहते है।

गिलफर्ड ने 1967 में क्यूबे के आकार का एक मॉडल प्रस्तुत किया जिसे बुद्धि संरचना मॉडल कहते है। इस मॉडल के अन्तर्गत 5×4×6 = 120 कोष बनाये गये।

कुल कोष = 120
मूल रूप से कोषो की संख्या = 120

बाद मे कोषो की संख्या 150 व उसके बाद 180 कर दी गई। लेकिन मूलरूप से कोषो की संख्या 120 थी।

- पदानुक्रमिक सिद्धान्त / क्रमिक महत्व का सिद्धान्त

प्रवर्तक :- बर्ट एवं बर्नन

वर्ट एव बर्नन ने मानसिक योग्यताओं को क्रमिक महत्व प्रदान किया। इन्होंने स्पीयरमैन की सामान्य मानसिक योग्यता को सर्वोच्च स्थान पर रखा फिर उसके विभाजन व उपविभाजन किए गये।

तथा संरचना पिरामिड के समान रखी गई।

2. कैटल व हॉर्न का बुद्धि सिद्धान्त :-

कैटल व हॉर्न ने स्पीयरमैन की सामान्य मानसिक योग्यता को दो भागो में बांटा है :-

तरल बुद्धि (Fluid Intelligence) → जन्मजात

ठोस बुद्धि (Crystalized Intelligence) → अर्जित

3. बहु बुद्धि सिद्धान्त (Multi Intelligence)

प्रवर्तक :- हावर्ड गार्डनर

इस सिद्धान्त का प्रतिपादन हार्वर्ड गार्डनर ने 1983 में किया।

गार्डनर का मानना है कि बुद्धि का स्वरूप संकीर्ण न होकर बहुकारकीय होता है। उन्होंने मूलरूप से बुद्धि के 7 प्रकार बताये है। बाद में 1998 में 8 वाँ प्रकार तथा सन 2000 में 9 वाँ प्रकार बताया। इस प्रकार वर्तमान में बुद्धि के 9 प्रकार स्वीकार किए गए है।

	बुद्धि	निष्पादन की संभावना
1.	भाषायी बुद्धि	कवि, वकील, लेखक, पत्रकार व्याख्याता आदि।
2.	तार्किक-गणितीय बुद्धि	गणितज्ञ, वैज्ञानिक आदि।
3.	संगीतात्मक बुद्धि (श्रवण)	संगीतकार, वायलिन व अन्य वाद्य यंत्रों को बजाने वाले।
4.	स्थानिक बुद्धि :	चित्रकार, मूर्तिकार सर्वेक्षण अधिकार आदि।
5.	शारीरिक गतिज बुद्धि :	नृत्यक व नृत्यांगना, खिलाड़ी मुक्केबाज, तैराक, शल्य-चिकित्सक, एयरहोस्ट पायलट आदि।
6.	अन्तरवैयक्तिक बुद्धि (Interpersonal Intelligence)	राजनेता, चिकित्सक, विक्रय अधिकारी आदि।

अन्तरा वैयक्तिक बुद्धि (Intraperisonal Intelligence)
योगी, संत व सही आत्मज्ञान से युक्त व्यक्ति।

प्रकृतिवादी बुद्धि: किसान, जीव वैज्ञानिक वनस्पति वैज्ञानिक आदि।

अस्तित्ववादी बुद्धि: दार्शनिक चिन्तक

बुद्धि मापन के सोपान

वास्तविक आयु (Chronological Age) C.A

मानसिक आयु (Mental Age) M.A

बुद्धि लब्धि (Intelligence Quatient) I.Q

बुद्धि लब्धि का सूत्र 1916 में टरमन ने दिया।

$$\frac{M.A}{C.A} \times 100$$

बुद्धि परीक्षण का इतिहास:-

बुद्धि परीक्षण के द्वारा मानसिक आयु ज्ञात की जाती है।
सबसे पहला बुद्धि परीक्षण 1905 में फ्रांस के निवासी अल्फ्रेड बिने ने साइमन की मदद से तैयार किया जिसका नाम बिने साइमन बुद्धि परीक्षण था।
प्रश्नो की संख्या 30 थी।

3. इस परीक्षण मे पहला संशोधन 1908 व दुसरा संशोधन 1911 में किया गया।
अब प्रश्नों की संख्या थी- 59

4. पुनः 1916 मे अमेरिका का स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय मे टरमन की अध्यक्षता मे बिने साइमन बुद्धि परीक्षण में संशोधन किया गया तथा संशोधित परीक्षण कहलाया। स्टेनफोर्ड बिने परीक्षण या टरमन बुद्धि परीक्षण
प्रश्नों की संख्या- 90

5. भारत मे सबसे पहला बुद्धि परीक्षण 1922 में F.G कॉलेज लाहौर के प्रिंसिपल डॉ C.H Rice के द्वारा बनाया गया।
C.H राइस - 1922

6. डा. C.H Rice ने बिने साइमन बुद्धि परीक्षण का भारतीय अनुकूलन किया तथा परीक्षण कहलाया - हिन्दुस्तानी बिने परफार्मेन्स पाइन्ट स्केल।
इस परीक्षण मे अंकगणन व अंकगणन थे।

7. भारत मे C.H. Rice के अलावा पं. सन्ध्याकर्मा आदिया, पालिया आदि के द्वारा भी अनेक बुद्धि परीक्षणों का निर्माण किया गया।

बुद्धि परीक्षण

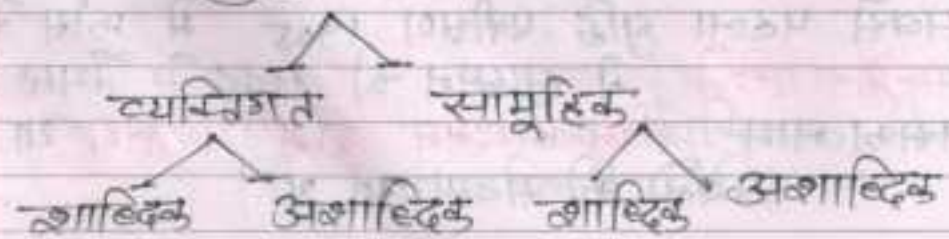

- शाब्दिक परीक्षण वे होते है जिनमे शब्दो का प्रयोग होता है बोलकर या लिखकर

- अशाब्दिक परीक्षण वे होते है जिनमे शब्दो का प्रयोग नही होता। जैसे:-
आकृति फलक परीक्षण। (निष्पादन परीक्षण)
वस्तु संयोजन परीक्षण।
चित्र- मूर्ति परीक्षण। (पेपर पेन्सिल परीक्षण)
चित्रांकन परीक्षण।
ब्लॉक बिल्डिंग परीक्षण। (निष्पादन परीक्षण)
मनुष्य कर्षण परीक्षण आदि। (पेपर पेन्सिल परीक्षण)

⇒ विभिन्न भाषी, विकलांग (गुंगे, बहरे, अंधे) व अनपढ़ व्यक्तियो के लिए अशाब्दिक परीक्षण विशेष उपयोगी होते है।

⇒ सबसे पहला व्यक्तिगत शाब्दिक बुद्धि परीक्षण फ्रांस में 1905 मे बनाया गया। जिसका नाम था

⇒ अशाब्दिक परीक्षणो को संस्कृति स्वतन्त्र परीक्षण (Culture free Test) के नाम से भी जाना जाता है।

⇒ यरकीज के द्वारा अमेरिका मे प्रथम विश्व युद्ध के समय सैनिको की छंटनी करने के लिए 1917 में दो प्रकार के सामुहिक परीक्षणो का निर्माण किया गया।
① आर्मी अल्फा परीक्षण: सामुहिक शाब्दिक
② आर्मी बीटा परीक्षण: सामुहिक अशाब्दिक

=) अशाब्दिक परीक्षण अधिकांशतः व्यक्तिगत होते है व कुछ व्यक्तिगत सामूहिक

=) शाब्दिक परीक्षण अधिकांशतः सामूहिक होते है व कुछ व्यक्तिगत

=) वर्तमान समय मे प्रचलित परीक्षण है- सामूहिक शाब्दिक

=) सर्वश्रेष्ठ बुद्धि परीक्षण है- व्यक्तिगत शाब्दिक

=) टरमन ने अशाब्दिक परीक्षणों की आलोचना करते हुए शाब्दिक परीक्षणों को उचित बताया है।

=) लेकिन कुछ मनोवैज्ञानिक अशाब्दिक परीक्षणों को उचित बताते है।

=) निष्कर्ष रूप मे शाब्दिक व अशाब्दिक परीक्षणों को एक दुसरे का विरोधी न समझकर पुरक समझना चाहिए।

बेसल वर्ष :-

जिस अधिकतम आयु स्तर के प्रश्नो को बालको द्वारा हल कर दिया जाता है उसे बेसल वर्ष कहते है। और यही उसकी मानसिक आयु मानी जाती है।

टर्मिनल वर्ष :-

जिस आयु स्तर के प्रश्नो को बाल

हल नहीं कर पाता है उसे टर्मिनल वर्ष कहते है।

टरमन ने बुद्धिलब्धि के वर्गीकरण की सारणी 1916 में तैयार की।

	बुद्धिलब्धि		बुद्धि वर्ग
1.	140 से अधिक	01%	प्रतिभाशाली (Genices)
2.	120-139	5%	प्रखर बुद्धि (Superior)
3.	110-119	14%	तीव्र बुद्धि (Above Average)
4.	90-109	60%	सामान्य (Average)
5.	80-89	14%	मन्द (मंगोलिप्म) व पिछड़े (Dull or Backward)
6.	70-79	5%	निर्बल बुद्धि (feeble minded)
7.	70 से कम	01%	निर्बल बुद्धि मूर्ख IInd

मूर्खो की श्रेणी

1. 50-69 = मूर्ख (Maron) - Ist
2. 25-49 = मूढ़ (Imbecile)
3. 25 से कम = जड़ (Idiat)

यदि बालक की वास्तविक आयु 10 गणित की
8 other = 10

औसत - $\frac{8+10}{2} = \frac{18}{2} = 9$

$\frac{9}{10} \times 100 = 90$

~~सभी~~ Most संवेगात्मक बुद्धि & जन्मजात
[Emotional Intelligence]

संवेग (Emotion)

Emotion शब्द की उत्पति Latin भाषा के Emovex से हुई है जिसका अर्थ होता है उत्तेजित करना।

1. संवेग व्यक्ति की उत्तेजित दशा को प्रदर्शित करते है
2. संवेग दो प्रकार के होते है।
3. संवेगो का प्रभाव व्यक्ति की क्रियाशिलता पर पड़ता है।
4. संवेग जन्मजात होते है।
5. सभी संवेगो का विकास एक साथ न होकर धीरे-2 होता है।

वाटसन के अनुसार नवजात शिशु में तीन संवेग होते है।

ब्रिजिश के अनुसार जन्म के समय केवल एक संवेग होता है। तथा 2 वर्ष की आयु तक बालक में सभी संवेगो का विकास हो जाता है।
संवेगो की मात्रा सभी व्यक्तियो मे समान नही होती है।
संवेग जाग्रत तो एकदम से हो जाते है लेकिन शान्त धीरे-2 होते है।
जैसे-2 संवेग तीव्र होते है बुद्धि मे कमी आने लगती है।

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से यदि देखा जाए तो संवेगात्मक बुद्धि शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग 1990 में दो अमेरिकी प्रोफेसर डा. जॉन मेयर व पीटर सेलोवे के द्वारा किया गया।
लेकिन वर्तमान समय में जिस रूप से संवेगात्मक बुद्धि की सर्वत्र चर्चा की जा रही है इसका प्रमुख श्रेय एक अमेरिकन मनोवैज्ञानिक डेनियल गोलमैन को जाता है। इन्होंने 1995 मे प्रकाशित अपनी पुस्तक संवेगात्मक बुद्धि बुद्धिलब्धि से अधिक महत्वपूर्ण क्यों के माध्यम से इसे चर्चा का विषय बनाया।

डेनियल गोलमैन की दुसरी पुस्तक का नाम है- संवेगात्मक बुद्धि के साथ कार्य

संवेगात्मक बुद्धि से तात्पर्य अपनी तथा दुसरो की भावनाओं को जानने समझने व उनका उचित प्रबन्धन करने से है।

किसमे कितनी संवेगात्मक बुद्धि है इसकी जाँच करने के लिए जिस इकाई विशेष का प्रयोग किया जाता है।

उसे E.Q (संवेगात्मक लब्धि) के नाम से जाना जाता है।

संवेगात्मक बुद्धि के मॉडल (प्रतिमान)

1. Ability Modal :-

प्रवर्तक :- डा जानमैयर व पीटर सैलो

इस मॉडल से तात्पर्य दुसरो की भावनाओ को जानने - समझने व उनका उचित प्रबन्धन करने से है।

2. Trait Modal :-

प्रवर्तक :- के वी पेट्रिड्स

इस मॉडल से तात्पर्य है स्वयं की भावनाओं को जानना, समझना, नियंत्रित करना व उचित प्रबन्धन करना।

3. Mixed Modal :-

प्रवर्तक :- डेनियल गोलमैन

इस मॉडल से तात्पर्य है अपनी तथा दुसरो की भावनाओं को जानना समझना नियंत्रित करना व सामाजिक कौशलो का विकास करना।

संवेगात्मक बुद्धि की उपयोगिता

1. कोई व्यक्ति जीवन मे कितना सफल हो सकता है उसकी भविष्यवाणी E.Q द्वारा की जा सकती है।
2. जीवन को सुखमय व शांतिप्रिय बनाने मे इसका योगदान होता है।
3. विद्यार्थी जीवन मे मिलने वाली सफलता के पीछे भी इसका योगदान होता है।
4. काम-काज की दुनिया मे निपुणता प्राप्त करने मे भी यह सहायक है।
5. समुदाय के अन्तर्गत अपना स्थान बनाये रखने मे भी E.Q सहायक है।
6. सम्बंधो मे घनिष्ठता लाने मे भी इसका योगदान होता है।
7. जीवन के विभिन्न क्षेत्रो में वांछित सफलता प्राप्त करने में भी इसका योगदान होता है।

अधिगम (Learning)

अधिगम एक ऐसी मानसिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति परिपक्वता की ओर बढ़ते हुए तथा अपने अनुभवों से लाभ उठाते हुए अपने व्यवहार में परिवर्तन या परिमार्जन करता है।

अधिगम की विशेषताएँ :-

1. सीखना सार्वभौमिक है।
2. सीखना वातावरण की उपज है।
3. सीखना जीवन पर्यन्त चलता रहता है।
4. सीखना व्यवहार में परिवर्तन करना है।
5. सीखना बुद्धि में विकास करना है।
6. सीखना अनुभवों का संगठन है।
7. सीखना एक खोज करना है।
8. अधिगम सक्रिय रहकर होता है।
9. अधिगम में समय लगता है।
10. अधिगम से अपेक्षाकृत स्थाई परिवर्तन होता है।

Q बालक नवीन व्यवहार को सीखता है।

(1) देखकर (3) सीखकर
(2) सुनकर (4) अनुभव करके

अधिगम के सोपान :-

① अभिप्रेरणा
② विभिन्न अनुक्रियाएँ ⑤ अनुभवों का संगठन
③ बाधाएँ ⑥ लक्ष्य
④ पुनर्बलन

अधिगम के सिद्धान्त

उद्दीपक अनुक्रिया सिद्धान्त (Stimulus Response theory)

प्रवर्तक - थार्नडाइक (व्यवहारवादी)
निवासी - अमेरिका
सिद्धान्त दिया - 1913
प्रयोग - बिल्ली पर

प्रयोग :- भूखी बिल्ली → पिंजरे मे बंद → बाहर मॉस का टुकड़ा (उद्दीपक) → अनुक्रिया

भूखी बिल्ली पर किए गये प्रयोग से इस सिद्धान्त का दुसरा नाम निकलना है। प्रयास व भूल या प्रयत्न व भूल का सिद्धान्त (Trial & Error theory) थार्नडाइक के अनुसार उद्दीपक को देखकर अनुक्रिया होती है अर्थात दोनो में सम्बध अथवा बन्धन होता है इस आधार पर इस सिद्धान्त का एक और नाम निकलता है सम्बधवाद/संयोजन वाद/ बन्धका सिद्धान्त (Bond theory)

थार्नडाइक द्वारा बताये गए अधिगम के नियम
मुख्य नियम (3)

1. तत्परता का नियम
2. अभ्यास का नियम
3. परिणाम व प्रभाव का नियम / सैंगेष व असैंगेष का नियम

अभ्यास के नियम :- (उपनियम)

1. उपयोग का नियम
2. अनुपयोग का नियम

=) गौण नियम (5)

1. बहु प्रतिक्रिया का नियम
2. मानसिक विन्यास का नियम
3. आंशिक क्रिया का नियम
4. आत्मीकरण का नियम
5. साहचर्य परिवर्तन का नियम

=) शैक्षिक महत्व

1. अनुभव से लाभ उठाना।
2. निरन्तर प्रयास पर बल।
3. अभ्यास की क्रिया पर आधारित।
4. करके सीखना।
5. असफलता में सफलता।
6. निराशा में आशा।
7. आत्मविश्वास व आत्मनिर्भरता।
8. छोटे बालकों के सीखने के लिए विशेष उपयोगी।
9. मन्द गति से सीखने वालों के लिए विशेष उपयोगी।

2. अनुक्रिया अनुकूलित सिद्धान्त (Condition Respon Theory)

शास्त्रीय अनुबंध सिद्धान्त / प्राचीन अनुबन्धन सिद्धान्त / अनुबन्धन का सिद्धान्त / सम्बध प्रक्रिया या प्रतिक्रिया / सम्बध प्रत्यावर्तन का सिद्धान्त

प्रवर्तक - पॉवलाव (व्यवहारवादी)
निवासी - रूस
सिद्धान्त दिया - 1904
प्रयोग किया - कुत्ते पर

C.S / C.R (अस्वाभाविक उद्दीपक)
U.C.S / U.C.R (स्वाभाविक उद्दीपक)

प्रयोग
कुत्ता → घण्टी → भोजन

भोजन को देखकर (लार स्वाभाविक अनुक्रिया (U.C.R)
घण्टी की आवाज पर गिरने वाली लार अस्वाभिक अनुक्रिया C.R

जो क्रिया (लार का गिरना) पहले भोजन को देखकर हो रही थी वही क्रिया घण्टी की आवाज को सुनकर होने लगी इसी को हम अनुकुलित अनुक्रिया सिद्धान्त कहते है।

पुनरावृति के आधार पर जो सम्बध स्थापित होता है उसे अनुबन्धन कहते है।

पॉवलव को अनुबन्धन का पिता / जनक माना जाता है।

इसी शरीर शास्त्री पॉवलव को इसी सिद्धान्त के परिणाम स्वरूप 1904 में नोबल पुरस्कार मिला।

मुख्य शब्दावली

1. विलोप / विलोपीकरण :-
अनुबन्धन स्थापित होने के बाद यदि बार-2 मात्र अनुबन्धित उद्दीपक (घण्टी) ही प्रस्तुत किए जाने पर अन्ततगत्वा अनुबन्धित क्रिया का बंद हो जाना विलोप कहलाता है

2. उद्दीपक सामान्यीकरण :-
बालक मिलती-जुलती परिस्थितियों के प्रति वैसा ही व्यवहार करता है जैसा वह पूर्व अनुभव में कर चुका है। जैसे
(i) एक बालक को लाल गुलाब का कांटा चुभने पर चोट पहुंची तो अब वह किसी भी लाल वस्तु से डरने लगा इसी को उद्दीपक सामान्यीकरण कहते हैं।
(ii) पॉवलव ने घण्टी की आवाज के स्थान पर सिटी बजाई जो कि घण्टी की आवाज से मिलती जुलती थी। तो इस पर कुत्ते ने वही क्रिया की जो वह घण्टी की आवाज पर करता था।
(iii) वॉटसन ने अलबर्ट नामक बालक पर प्रयोग करके यह निष्कर्ष निकाला कि बालक खरगोश से तो डरने ही लगा साथ ही साथ रोयेदार चीजो से भी डरने लगा।

3. उद्दीपक विभेदीकरण (Stimulus Differentiation)
कुत्ते को घण्टी की आवाज पर पुर्नबलित किया गया। लेकिन सिटी की आवाज पर नही तो कुत्ता धीरे-2 दोनो उद्दीपको के बीच विभेद करना सीख गया।

और अब वह घण्टी की आवाज पर ही क्रिया करता था। सीटी की आवाज पर नहीं।

3. सक्रिय अनुबन्धन सिद्धान्त / क्रिया प्रसूत अनुबन्धन / कार्यात्मक अनुबन्धन सिद्धान्त (Operent Conditioning theory): इच्छित्र व्यवहार

प्रवर्तक :- स्किनर (अमेरिका) 1938

स्किनर ने चूहे व कबूतर पर प्रयोग किए।
1938 1943

प्रयोग

चूहा → बाक्स में बन्द → उछलकूद (क्रिया योजना पुनर्बलन)

स्किनर क्रियाओं पर विशेष जोर देते है इसलिए उन्होंने थार्नडाइक के S-R सिद्धान्त को R.S में बदल दिया।

स्किनर का मानना है कि क्रिया करते रहना चाहिए तथा क्रिया करने के तुरन्त बाद बालक को पुनर्बलन देना चाहिए क्योंकि पुनर्बलन मिलने से क्रिया करने की गति में और अधिक तीव्रता आ जाती है।

शैक्षिक महत्व :-

1. वांछित / उचित अनुक्रियाओं के पुर्नबलीकरण से बालकों को प्रोत्साहन मिलता है और वे उचित व्यवहार करने लगते है।
2. क्रिया के अनुसार सकारात्मक व नकारात्मक पुनर्बलन तुरन्त देना चाहिए क्योंकि देर करने से इसका प्रभाव कम हो जाता है।
3. अनुक्रिया अनुदेशन इसी सिद्धान्त पर आधारित है।

4. गेस्टाल्ट सिद्धान्त या सूझ या अन्तर्दृष्टि का सिद्धान्त (Gestalt or Insight theory):-

गेस्टाल्ट जर्मन भाषा का एक शब्द है जिसका अर्थ होता है प्रतिकार या समग्रानुभूति

1920 में जर्मनी में गेस्टाल्ट सम्प्रदाय का उदय हुआ इस सम्प्रदाय से सम्बन्धित व्यक्ति थे मैक्स वर्दीमर कोहलर, कौफ्का व कुर्टलेविन। ये सभी गेस्टाल्टवादी कहलाये तथा उन्होंने जो सिद्धान्त दिया वह गेस्टाल्ट सिद्धान्त कहलाया।

⇒ कोहलर ने सुल्तान नामक चिम्पाजी पर प्रयोग किया।

प्रयोग

चिम्पाजी (सुल्तान) → कमरे में बंद → छत पर लटकते केले → सूझ-बूझ का प्रयोग → बक्से पर चढ़कर केले प्राप्त किया।

⇒ इस प्रयोग से इस सिद्धान्त का दूसरा नाम सूझ व अन्तर्दृष्टि का सिद्धान्त निकलता है।

⇒ इस प्रयोग से इस सिद्धान्त के कुछ नियम निकलकर आते है।

1. संरचनात्मक का नियम (Law of Constructivist)
2. समीपता का नियम (Law of Proximity)
3. समानता का नियम (Law of Similiarity)
4. सरलता का नियम (Law of Simplicity)

प्रवर्तक - मैक्स वर्दीमर
प्रयोगकर्ता - कोहलर
सहयोगकर्ता - कोफ्का / कोफ्का व कुर्तलेविन

1. छोटे बालक जिनकी बुद्धि का पूर्ण विकास नहीं हो पाता है वे प्रयास व त्रुटि द्वारा सीखते है लेकिन किशोर जिनकी बुद्धि का पूर्ण विकास हो जाता है वे सूझ एवं अन्तर्दृष्टि द्वारा ही सीखते है।
2. पूर्ण से अंश की ओर चिंतन सूत्र इसी सिद्धान्त की देन है।
3. अध्यापक को चाहिए कि वह बालको को समस्या का पूरा ज्ञान करावें यदि सम्बन्ध / समस्या के प्रति ज्ञान अपूर्ण होगा तो अन्तर दृष्टि विकसित नहीं हो सकेगी।
4. इस सिद्धान्त के द्वारा सीखने से विचार शक्ति, कल्पना शक्ति निरीक्षण शक्ति आदि मानसिक योग्यताओं का विकास होता है।
5. विज्ञान गणित व्याकरण जैसे कठिन विषयो को सीखने और सीखाने के लिए यह सिद्धान्त उपयोगी है।
6. अनुसंधान व समस्या समाधान के क्षेत्र में सिद्धान्त की विशेष उपयोगिता है।
7. यह सिद्धान्त यांत्रिक तरीके से सीखने का खण्डन करता है तथा तार्किक तरीके से सीखने पर बल देता है।

5. सामाजिक अधिगम सिद्धान्त (Social learning theory)

प्रवर्तक :- अलबर्ट बान्डूरा

समाज द्वारा मान्य व्यवहार को अपनाने तथा अमान्य व्यवहार को त्याग दे त्यागने के कारण ही यह सामाजिक अधिगम सिद्धान्त कहलाया।

चुहिया तथा जीवित जोकर पर किए गये प्रयोगो से बन्दुरा ने यह निष्कर्ष निकाला की बालक अनुकरण के माध्यम से सीखता है।

अनुकरण द्वारा सीखने की प्रक्रिया :-

1. अवधान / ध्यान केन्द्रित
2. धारण
3. पुनः प्रस्तुतीकरण
4. पुनर्बलन

Important

Note: दूसरों के व्यवहार को देखकर सीखना सामाजिक अधिगम कहलाता है।

Note: जिसको देखकर बालक व्यवहार करना सीखता है उसे प्रतिमान (मॉडल) कहते है।

शैक्षिक महत्व :-

Imp. 1. बालक के व्यक्तित्व निर्माण मे यह सिद्धान्त विशेष उपयोगी है।

2. छोटे बालक सही व गलत व्यवहार मे अन्तर करने मे अपने को असमर्थ पाते है यही कारण है कि वे गलत व्यवहार को अनुकरण के माध्यम से सीख लेते है। अतः बालक के सामने सही व्यवहार वाले प्रतिमान को आकर्षित तरीके से प्रस्तुत करना चाहिए।

3. कक्षा-कक्ष मे बालक के सामने सदैव आदर्श व्यक्ति वाले प्रतिमान ही प्रस्तुत करना चाहिए।

संरचनात्मकता या निर्मितवाद (Constructivist)

प्रवर्तक :- जेरोम ब्रुनर [रचना करना किसी चीज, वस्तु को बुनना (ब्रुनर)]

संरचनात्मक शब्द से तात्पर्य ज्ञान की संरचना बनाना।

संरचनात्मक शब्द की उत्पत्ति मनोविज्ञान के संज्ञानात्मक क्षेत्र से हुई है।

ब्रुनर का मानना है कि बालकों को इस प्रकार से पढ़ाया जाये ताकि उनकी मानसिक योग्यताओं का विकास हो सके तथा वे स्वयं ज्ञान की संरचना कर सके।

जेरोम ब्रुनर का मानना है कि जो भी विषयवस्तु पढ़ाई जाये उसकी मुलप्रवृत्ति व सिद्धान्तों से बालकों को अवगत कराया जाए क्योंकि ऐसा करने से :-
सीखना सरल हो जाता है।
बालक रुचि के साथ सीखता है।
ऐसा ज्ञान स्थाई होता है।
ऐसा ज्ञान अधिगम स्थानान्तरण में सहायक होता है।

निर्मितवाद

निर्मितवाद एक छात्र केन्द्रित क्रिया है।
इसमें बालक स्वयं ज्ञान का सर्जन करते है।
नवीन ज्ञान का सर्जन पूर्व ज्ञान के आधार पर किया जाता है।
निर्मितवाद पूर्वज्ञान के अनुभव पर बल देता है।
यह छात्रों की सक्रियता पर बल देता है।
यह अर्थपूर्ण अधिगम पर बल देता है।

7. यह बालकों में जिम्मेदारी व उत्तरदायित्व की भावना जागृत करता है।
8. यह बालकों में आपसी साझेदारी व सहयोग की भावना जागृत करता है।
9. समूह के द्वारा आपस में चर्चा करते हैं सक्रिय रहते हैं तथा पूर्वज्ञान व नवीन ज्ञान की अन्तः क्रिया करते हुए समस्या का समाधान या निष्कर्ष निकालते हैं।

जेरोम ब्रुनर द्वारा बताई गई अधिगम की अवस्था :-

① विधि निर्माण आधारित अधिगम की अवस्था (Enactive) - 0-2 वर्ष

इस अवस्था में शिशु अपनी संवेदनाओं व शारीरिक क्रियाओं के माध्यम से अधिगम करता है।

② प्रतिमा आधारित अधिगम की अवस्था (Iconic) - 3-12 वर्ष

इस अवस्था में बालक मूर्त प्रत्यक्षीकरण द्वारा अधिगम करता है।

③ चिह्न आधारित अधिगम की अवस्था (Symbolic) - 12 के बाद

इस अवस्था में किशोर, चिन्हों प्रतीकों व अमूर्त चिन्तन द्वारा अधिगम करता है।

7. आसुबेल का अधिगम सिद्धान्त :-

आसुबेल व जेरोम ब्रुनर दोनो के सिद्धान्त आधुनिक संज्ञानात्मक क्षेत्र के अन्तर्गत आते है। दोनो के सिद्धान्त अर्थपूर्ण अधिगम पर बल देते है।
दोनो के सिद्धान्त लगभग समान है केवल एक विषमता है

- जेरोम ब्रुनर का मानना है कि बालक अर्थपूर्ण अधिगम आगमनात्मक तरीके (उदा. से नियम) से करता है जबकि आसुबेल का मानना है कि बालक अर्थपूर्ण अधिगम निगमनात्मक तरीके (नियम से उदाहरण) से करता है।

8. पुनर्बलन / प्रबलन / सबलीकरण का सिद्धान्त / क्रमबद्ध व्यवहार सिद्धान्त / चालक न्यूनता सिद्धान्त / परिष्कृत सिद्धान्त / पर्याप्त सिद्धान्त (Rainporcement theory) :- इस सिद्धान्त का प्रतिपादन क्लार्क हल ने 1943 में अपनी पुस्तक Principle of Behaviour के अन्तर्गत किया।

- आवश्यकता की पूर्ति करना इस सिद्धान्त का मुख्य तत्व है।

- थार्नडाइक के अनुसार उद्दीपक को देखकर अनुक्रिया होती है। जबकि क्लार्क हल के अनुसार अनुक्रिया उद्दीपक के कारण ना होकर आवश्यकता के लिए होती है।

- आवश्यकता की पूर्ति के लिए उठाया गया हर एक सफल कदम व्यक्ति को पुनर्बलन देता है तथा व्यक्ति क्रमबद्ध तरीके से व्यवहार करता हुआ आगे बढ़ता है।

तथा आवश्यकता पूर्ति करके चालक को शान्त करता है।

क्लार्क हल के अनुसार :-
सीखना आवश्यकता की पूर्ति की प्रक्रिया के द्वारा होता है।

स्किनर के अनुसार :-
अब तक सीखने के जितने भी सिद्धान्त प्रस्तुत किए गये हैं उनमें यह सर्वश्रेष्ठ है।

9 कुर्तलेविन का क्षेत्रसिद्धान्त या तलरूप सिद्धान्त (field theory) :-
इस सिद्धान्त के अनुसार अधिगम व्यक्ति और वातावरण का प्रतिफल है। इसे निम्न संकेत द्वारा दर्शाया गया है।

$$L = f(P_p - E_p)$$

L = Learning

f = Field

P = Personal

E = Enviorment

10. टॉलमैन का चिन्ह सिद्धान्त (Sign theory)

इस सिद्धान्त के अनुसार बालक चिन्हों के माध्यम से अधिगम करता है। टॉलमैन ने वातावरणीय उद्दीपकों को चिन्ह नाम दिया है।

11. गुथरी का प्रतिस्थापन सिद्धान्त (Substitution theory)

एडविन गुथरी

इस सिद्धान्त के अनुसार अधिगम जन्मजात व अर्जित अनुक्रियाओं को दूसरी अथवा प्रतिस्थापित क्षेत्रों की ओर विस्थापित करने की क्रिया है।

12. कार्ल रोजर्स का अनुभव (जन्य) अधिगम सिद्धान्त (Experienced learning theory)

- यह सिद्धान्त अनुभव द्वारा सीखने पर बल देता है। इस सिद्धान्त का मानना है कि अध्यापकों को बालकों पर क्या पढ़ना है, कैसे पढ़ना है, कितना पढ़ना है आदि बातें को थोपना नहीं चाहिए बल्कि उन्हें स्वतंत्रतापूर्वक अधिगम करने देना चाहिए
- शिक्षकों को व्याख्यान विधि जैसी परम्परागत विधियों के स्थान पर शैक्षिक भ्रमण सेमीनार कार्यशाला आदि नीतियों का प्रयोग करना चाहिए ताकि बालक स्वयं अनुभव करके सीख सके।

13. मैसलो का मानवतावादी अधिगम सिद्धान्त (Humanistic Learning theory) या आवश्यकता प्रक्रमानुक्रमिक सिद्धान्त (Need Hierarchical theory)

मैसलो के अनुसार व्यक्ति की पाँच आवश्यकताएँ अधिगम करने के लिए प्रेरित करती है।

अधिगम के सिद्धान्त :-

अधिगमो के सिद्धान्तो को मुख्य रूप से दो भागो मे बाँटा गया है :-

1. साहचर्य / परिस्थिति / व्यवहारात्मक सिद्धान्त :
   (1) थार्नडाइक :- उद्दीपक अनुक्रिया सिद्धान्त
   (2) पावलव :- अनुकूलित अनुक्रिया सिद्धान्त
   (3) स्किनर :- सक्रिय अनुबन्ध सिद्धान्त
   (4) क्लार्क हल :- पुनर्बलन का सिद्धान्त
   (5) गुथरी :- प्रतिस्थापन सिद्धान्त

3. केन्द्रीय / क्षेत्रीय / संज्ञानात्मक सिद्धान्त
1. वेरथ्स वर्दीमर :- गेस्टाल्ट सिद्धान्त
2. अल्बर्ट बाण्डुरा :- सामाजिक अधिगम सिद्धान्त
3. कुर्ट लेविन :- क्षेत्र सिद्धान्त
4. टालमैन :- चिन्ह सिद्धान्त

2. अन्य :
(1) जेरोम ब्रूनर :- संरचनात्मक अधिगम सिद्धान्त (आधुनिक संज्ञानात्मक क्षेत्र)
(2) आसुबेल :- अधिगम सिद्धान्त
(3) कार्ल रोजर्स :- अधिगमजन्य सिद्धान्त (मानवतावादी क्षेत्र)
(4) मैसलो :- आवश्यकता क्रमानुक्रमिक सिद्धान्त

अधिगम के प्रकार

रोबर्ट गेने ने अधिगम के 8 प्रकार बताये है तथा उन्हे सरल से जटिल क्रम में प्रस्तुत किया है।

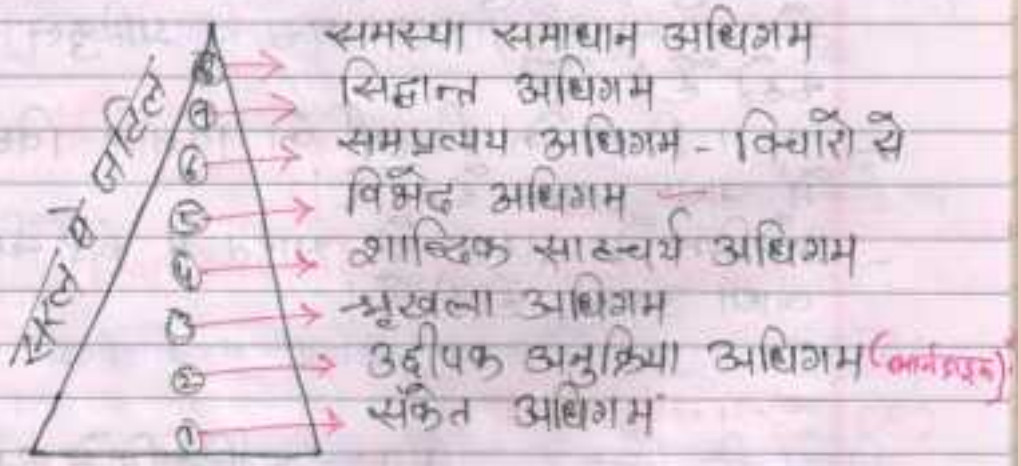

अधिगम स्थानान्तरण :-
जब एक स्थिति में सीखा हुआ ज्ञान किसी दुसरी स्थिति में अधिगम स्थानान्तरण कहते है।

(1) सकारात्मक स्थानान्तरण :-
जब एक स्थिति में सीखा हुआ ज्ञान किसी दुसरी स्थिति में सहायक होता है तो इसे सकारात्मक / धनात्मक व अनुकुल स्थानान्तरण कहते है। जैसे :-
- साइकिल चलाने वाला स्कुटर चलाना आसानी से सीख जाता है।
- गणित विषय का ज्ञान भौतिकी के ज्ञान में सहायक होता है।

(2) नकारात्मक स्थानान्तरण :-
जब एक स्थिति में सीखा हुआ ज्ञान दुसरी स्थिति में बाधक होता है तो इसे नकारात्मक / अहितात्मक व प्रतिकुल स्थानान्तरण कहते है। जैसे
- कला विषय के विद्यार्थी को विज्ञान विषय पढ़ने में बाधा उत्पन्न होती है।
- अमेरिका के ड्राइवर को भारत में कार चलाने में बाधा उत्पन्न होती है।

(3) शुन्य स्थानान्तरण :-
जब एक स्थिति में सीखा हुआ ज्ञान किसी दुसरी स्थिति में न तो सहायक और न बाधक होता है तो इसे शुन्य स्थानान्तरण कहते है।

लिये:-
प्रार्थना याद कर लेने पर भी देशभक्ति गीत याद करने मे उतना ही समय लगता है।
- एक क्रिकेट मैच में बैटिंग का ज्ञान बॉलिंग मे सहायक नही होगा।
- कबीर के दोहे याद कर लेने पर भी रहीम के दोहे याद करने मे उतना ही समय लगता है।

* अभिप्रेरणा (Motivation) *

अभिप्रेरणा

Latin = Motum

↓

Move, Motion (गति करना)

अभिप्रेरणा एक ऐसा प्रेरक बल है जो व्यक्ति को लाभ प्राप्ति की ओर या निश्चित व्यवहार करने के लिए अग्रसर करता है अथवा गति प्रदान करता है।

⇒ क्रेच एवं क्रेचफील्ड के अनुसार :-
अभिप्रेरणा हमारे क्यों का उत्तर देती है।

⇒ सिकानर :- अभिप्रेरणा अभीष्ट एवं सर्वोत्कृष्ट राजमार्ग है।

⇒ स्टर्लिंग :- किसी व्यक्ति मे कार्य करने की प्रवृत्ति जाग्रत करना ही अभिप्रेरणा है।

अभिप्रेरणा अधिगम का सर्वोत्तम सोपान।
अभिप्रेरणा अधिगम का सर्वोत्कृष्ट राजमार्ग।
अभिप्रेरणा अधिगम का हृदय।
अभिप्रेरणा अधिगम का स्वर्णपथ।
अभिप्रेरणा अधिगम का मुख्य चालक

अधिगम सर्वोत्तम होगा जब अभिप्रेरणा होगी।

अभिप्रेरणा के स्त्रोत

1. आवश्यकता (Need) :- प्रत्येक व्यक्ति की कोई ना कोई आवश्यकता होती है। जो उसे क्रिया करने के लिए प्रेरित करती है।

2. चालक / प्रणोदन / अन्तर्नोद (Rsive)

प्रत्येक आवश्यकता से जुड़ा हुआ एक चालक होता है जैसे भोजन की आवश्यकता से जुड़ा हुआ चालक है। भूख, पानी की आवश्यकता से जुड़ा हुआ चालक है प्यास जो कि व्यक्ति को क्रिया करने के लिए प्रेरित करता है। (भूख, प्यास, नींद आदि)

3. उद्दीपक / प्रोत्साहन (Incentive)

उद्दीपक सामने देने पर व्यक्ति क्रिया करने के लिए प्रेरित होता है। उद्दीपक के मिलने पर चालक शान्त हो जाता है व तनाव शान्त हो जाता है।

अभिप्रेरक :-
उपरोक्त तीनों का योग ही अभिप्रेरक है।

अभिप्रेरक :- आवश्यकता + चालक + उद्दीपक

Motive :- M + D + I

अभिप्रेरकों का वर्गीकरण :-

1. मैक्लिो के अनुसार :-
   (1) जन्मजात
   (2) अर्जित
2. थॉमसन के अनुसार :-
   (1) स्वभाविक
   (2) कृत्रिम
3. गैरेट के अनुसार :-
   (1) जैविक / दैहिक
   (2) मनोवैज्ञानिक
   (3) सामाजिक

अभिप्रेरणा के सिद्धान्त :-

(1) मूल प्रवृत्यात्मक सिद्धान्त :- विलियम मेन्डूगल
इस सिद्धान्त के अनुसार मूल प्रवृत्तियाँ व्यक्ति को क्रिया करने के लिए प्रेरित करती है।

(2) मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त :- सिग्मंड फ्रायड
इस सिद्धान्त के अनुसार अचेतन मन में दमित इच्छाएँ व्यक्ति को क्रिया करने के लिए प्रेरित करती है।

3. उपलब्धि अभिप्रेरणा सिद्धान्त :- — मैक्लीलैंड

इस सिद्धान्त का प्रतिपादन हार्वर्ड विश्वविद्यालय के मनोवैज्ञानिक डेविड सी मैक्लिलैण्ड द्वारा किया गया इनके सहयोगी थे एटकिन्सन व होमेन्गा।

फ्रनलिड के अनुसार :-

उपलब्धि अभिप्रेरणा से तात्पर्य श्रेष्ठता के विशेष स्तर को प्राप्त करने की इच्छा से है।

उपलब्धि अभिप्रेरणा से प्रेरित होकर व्यक्ति वहाँ तक पहुंचने की चाह रखता है जहाँ तक प्रयासों के द्वारा पहुँचा जा सकता है।

4. आवश्यकता / पदानुक्रमिक सिद्धान्त :- मैस्लो

इस सिद्धान्त के अनुसार पाँच अवस्थाएं व्यक्ति को क्रिया करने के लिए प्रेरित करती है।

5. सक्रियता का सिद्धान्त :-

इस सिद्धान्त के अन्तर्गत सोलियबर्ग, मैस्मो, लिडक्से के नाम लोकप्रिय है।

यह सिद्धान्त व्यवहार की दक्षता पर बल देता है तथा दक्षता के लिए मांसपेशियों की सक्रियता पर बल देता है।

6. संतुलन - स्थैर्य सिद्धान्त :-

इस सिद्धान्त में चैपलिन, कौफर व एपल के नाम लोकप्रिय है यह सिद्धान्त असन्तुलन की स्थिति में भी संतुलन बनाये रखने पर बल देता है।

1. प्रशंसा एवं निंदा द्वारा।
2. आवश्यकताओं का ज्ञान कराकर।
3. आकांक्षा का स्तर बनाकर।
4. सफलता का आभास कराकर।
5. असफलता का भय दिखाकर।
6. प्रतिस्पर्द्धा की भावना जागृत करके।
7. प्रतियोगिताओं के आयोजन द्वारा।
8. महापुरुषों के उदाहरण द्वारा।
9. उचित शिक्षण विधियों के प्रयोग द्वारा।
10. दृश्य श्रव्य सामग्री के प्रयोग द्वारा।
11. पाठ्य सहगामी क्रियाओं के आयोजन द्वारा।
12. विद्यालय एवं कक्षा के उचित वातावरण द्वारा।

1. रुचि जागृत करने में सहायक।
2. ध्यान केन्द्रित करने में सहायक।
3. व्यवहार को नियंत्रित करने में सहायक।
4. अनुशासन स्थापित करने में सहायक।
5. मानसिक क्रियाओं के विकास में सहायक।
6. अधिगम तत्परता जागृत करने में सहायक।
7. लक्ष्य प्राप्ति में सहायक।
8. चरित्र निर्माण में सहायक।

व्यक्तिगत विभिन्नता
Individual Difference

गायलर =>
शरीर के रूप, रंग, आकार, सीखने की गति, स्मृति, अभिरुचि उपलब्धि, रुचि, अभिवृत्ति आदि पक्षों में पायी जाने वाली भिन्नता को व्यक्तिगत विभिन्नता कहते हैं।

विशिष्ट बालक =>
ऐसे बालक जो औसत दर्जे के बालकों से भिन्न होते हैं। विशिष्ट बालक कहलाते हैं। ऐसे बालक सामान्य दर्जे के बालकों से या तो बहुत आगे निकल जाते हैं या फिर पीछे रह जाते हैं।

1. प्रतिभाशाली बालक =>

क्रो व क्रो के अनुसार =>
प्रतिभाशाली बालक दो प्रकार के होते हैं।
1. ऐसे बालक जिनकी बुद्धि लब्धि 130 से अधिक होती है।
2. वे बालक भी प्रतिभाशाली बालकों की श्रेणी में आते हैं। जो किसी विशिष्ट क्षेत्र (कला, नृत्य, संगीत, खेल) में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हैं।

प्रतिभाशाली बालकों की विशेषताएँ :-
1. मानसिक रूप से स्वस्थ
2. सकारात्मक सोच
3. सहनशील
4. धैर्यवान
5. आत्मसम्मान के साथ-2 दुसरो का सम्मान करने वाले

6. मानसिक स्वास्थ्य।
7. कठिन विषयों में रूची।
8. विद्यालय जाने से पहले पढना लिखना।
9. मानसिक क्रियाओं में तीव्र गति से विकास।
10. निर्णय क्षमता।

⇒ शिक्षा व्यवस्था
1. तीव्र उन्नति।
2. त्वरण प्रक्रिया।
3. समृद्ध / संवर्धन कार्यक्रम / पाठ्यक्रम।
4. पृथक कक्षाओं की व्यवस्था।
5. पुस्तकालय सुविधायें।
6. नेतृत्व का प्रशिक्षण।
7. उत्तरदायित्व के कार्य सोपान।
8. निगमन ह्यूरिस्टिक, प्रयोगशाला प्रोजेक्ट आदि विधियों का प्रयोग करना।
9. कभी-2 ऐसे बालकों को कक्षा में पढ़ाने के अवसर प्रदान करना।

2. पिछड़े बालक / शैक्षिक दृष्टि से पिछड़ा ⇒

थॉर्नडाल के अनुसार ⇒
सामान्यतः पिछड़े बालक वे होते है जिनकी शैक्षणिक उपलब्धि उनकी सामान्य योग्यताओं से कम होती है।

बर्ट के अनुसार :-
पिछड़े बालक वे होते है जो अपनी आयु स्तर की कक्षा से एक सीढ़ी नीचे की कक्षा का कार्य करने में भी असमर्थ होते है।

एक पिछड़ा बालक मंदबुद्धि ही होगा ऐसा जरूरी नहीं है क्योंकि एक प्रतिभाशाली बालक पिछड़ा नहीं हो सकता इसकी कोई गारन्टी नहीं है।

⇒ पिछड़ेपन के प्रकार :-

① सामान्य पिछड़ापन ⇒
यदि बालक अपने पाठ्यक्रम के सभी विषयों में कमजोर है तो इसे सामान्य पिछड़ापन कहते है।

② विशिष्ट पिछड़ापन ⇒
यदि बालक अपने पाठ्यक्रम के एक या दो विषयों में कमजोर है तो उसे विशिष्ट पिछड़ापन कहते है।

⇒ पिछड़ेपन का उपचार किया जा सकता है।

शिक्षा व्यवस्था ⇒
1. पिछड़ेपन के कारणों को जानना व उन्हे दूर करना अर्थात निदान व उपचार करना।
2. व्यक्तिगत ध्यान देना।
3. वातावरणीय कारकों पर नियंत्रण करना।
4. निर्देशन व परामर्श आदि।

3. मंदबुद्धि बालक / धीमी गति से सीखने वाले बालक / मानसिक रूप से पिछड़े बालक / मानसिक रूप से विकलांग बालक :-
मंदबुद्धि बालक अपनी मानसिक योग्यताओं का प्रयोग करने की दृष्टि से उसी प्रकार अपंग व बेबस होते है जिस प्रकार से शारीरिक रूप से विकलांग बालक अपंग व बेबस होता है।

ऐसे
- बालक अपने विकास काल मे चलना बोलना व अन्य व्यवहार करना मंद गति से सीखते है।
- तार्किक चिन्तन करने मे असमर्थ होते है।
- दुसरो पर निर्भर रहते है।
- जिज्ञासा प्रवृति नही पायी जाती है।
- असफलता का भाव पाया जाता है।
- हीनभावना के शिकार रहते है।
- उत्तरदायित्व की क्षमता भी सीमित होती है।

शिक्षा व्यवस्था =>
प्रयास करना।
1. जन्मदर पर नियंत्रण।
2. विशेष शिक्षण विधियो को प्रयोग मे लेना।
3. माण्टेसरी पद्धति का प्रयोग।
4. मूल्य दृश्य सामग्री का प्रयोग अर्थात मूर्त रूप से पढ़ाना।
5. अध्ययन की गति धीमी रखना व पाठ को बार-2 दोहराना।
6.

4. अधिगम निर्योग्य बालक =>
ऐसे बालक जिसको भाषा को बोलने लिखने समझने में शारीरिक, मानसिक या अन्य किसी कारण से बाधा उत्पन्न होती है। अधिगम निर्योग्य बालक कहलाते है।
ऐसे बालको को संख्या, दिशा, समय वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियाँ व अंकगणितिय गणना करने मे भी बाधा उत्पन्न होती है।

अधिगम निर्योग्यता चार प्रकार की होती है।

1. डिस्ग्रेफिया ⇒ लेखन सम्बंधी व्यतिक्रम / असामान्यता
2. डिस्लेक्सिया ⇒ पठनवाचन सम्बंधी व्यतिक्रम
3. डिस्केल्कुलिया ⇒ गणितिय व्यतिक्रम
4. डिस्प्रेक्सिया ⇒ लेखन, पठन व गणितिय व्यतिक्रम

5. बाल अपराधी या समस्यात्मक बालक ⇒

जो बालक अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति समाज द्वारा स्वीकृत व्यवहार के अनुसार करते है बाल अपराधी कहलाते है। अर्थात् सामाजिक नियमो का उल्लंघन कर समाज विरोधी तरीके से किया जाने वाला कार्य बाल अपराध कहलाता है।

बाल अपराधियो की विशेषताएँ :

⇒
1. ऐसे बालको की शारीरिक संरचना असामान्य होती है। तथा ये हृष्ट-पुष्ट मांसपेशियों वाले होते है।
2. ऐसे बालक सन्देही, आक्रामक विद्रोही निडर व विध्वंसात्मक होते है।
3. ऐसे बालक सत्ता के विरोधी सत्ता के आगे न झुकने वाले व शत्रुतापूर्ण भाव रखने वाले होते है।
4. ऐसे बालको में बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले गुण पाये जाते है।
5. ऐसे बालको में स्नेह का अभाव पाया जाता है। तथा माता-पिता के नैतिक मानदण्ड इन्हे निर्देशित नही कर पाते है।

⇒ बाल अपराधी के कृत्य / कार्य :-

1. शिक्षण में बाधा उत्पन्न करना।
2. विद्यालय से भाग जाना।
3. कक्षा में देरी से आना।
4. गृहकार्य नहीं करना।
5. क्रोध व झगड़ा करना।
6. छोटे बालकों को तंग करना।
7. कक्षा में चिड़चिड़ापन।
8. विद्यालय की सामग्री को नुकसान पहुँचाना।
9. विद्यालय की कार्यवाहियों के प्रति असन्तोष व्यक्त करना।
10. निर्देश्य भटकना।
11. धोखाधड़ी व ठगी करना।
12. जुआ खेलना।
13. मादक पदार्थों का सेवन करना।
14. हत्या करना।
15. अन्य असामाजिक व अनैतिक कार्य।

⇒ शिक्षा व्यवस्था :-

1. उचित निर्देशन व परामर्श।
2. मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति।
3. अच्छी आदतों का विकास।
4. प्रेम व सहानुभूति पूर्ण व्यवहार।
5. अच्छे कार्यों की प्रशंसा करना।
6. मनोरंजन की उचित व्यवस्था।
7. जिम्मेदारी के कार्यों में व्यस्त रखना।

6. सृजनशील बालक :-

जो बालक स्वयं की प्रेरणा व नये विचारों तथा प्रतिभाओं के साथ किसी नयी वस्तु का सृजन करता है। सृजनशील बालक कहलाता है। ऐसे बालकों में अनेक विशेषताएँ पाई जाती है।

1. कल्पनाशीलता।
2. मौलिकता - (नवीन और उपयोगी)
3. गतिमयता या लोचशीलता।
4. निरन्तरता या धारा प्रवाहित।
5. विस्तारण।
6. दूर दृष्टि व अन्य। अन्तः दृष्टि।
7. जिज्ञासा।
8. समस्या समाधान करने की योग्यता।
9. दृढ़ निश्चयी।
10. जोखिम उठाने को उत्सुक।
11. कार्यों में निष्ठा।
12. संवेदनशीलता।

⇒ सृजनात्मकता का स्वरूप :-

1. सृजनात्मकता जन्मजात व अर्जित होती है।
2. यह सार्विभौमिक होती है।
3. सृजनात्मकता का विकास बाल्यावस्था से प्रारम्भ हो जाता है। तथा 30 वर्ष की आयु तक सृजनात्मकता अपनी चरम सीमा पर पहुँच जाती है।
4. जो बालक अध्ययन में विशेष रुचि लेते है उनमें सृजनात्मकता कम अथवा नगण्य होती है।
5. जो बालक सृजनशील होते है वे अध्ययन में कम रुचि लेते है।

7. सृजनात्मकता व बुद्धि में सकारात्मक सम्बंध होता है।
8. औसत से अधिक बुद्धि वाला कोई भी बालक सृजनशील हो सकता है।

⇒ सृजनात्मकता अपसारी चिन्तन (Divergent thinking) पर आधारित होती है जबकि बुद्धि अभिसारी चिन्तन पर आधारित होती है।

⇒ अपसारी चिन्तन:
इसमें व्यक्ति उत्तर की खोज में चिन्तन मनन करने लगता है। तथा विस्तृत उत्तर देता है। जैसे:-
लकड़ी के छड़ के क्या उपयोग है।
1. हवा तथा पानी के बीच सम्बंध बताइये?
2. घोड़े के खिलौने को मनोरंजक बनाने के सुझाव दे।
3. यदि मनुष्य पक्षियों की भाँति उड़ने लग जाये तो।
4.

⇒ अभिसारी चिन्तन:- बुद्धि (अभिसारी यानि बहुत सारी बुद्धि)
इस चिन्तन में व्यक्ति मानसिक तरीके से सोचता हुआ एक निश्चित उत्तर पर पहुंच जाता है जैसे:-
भारत के प्रधानमंत्री कौन है।
1. सबसे पहले बुद्धि परीक्षण कब बना।
2.

Note: अभिसारी व अपसारी शब्दों का सर्वप्रथम प्रयोग गिलफर्ड ने किया।

⇒ सृजनात्मकता का मापन:-
सृजनात्मकता को मापने का प्रमुख प्रयास गिलफर्ड ने किया। इनके अलावा

गेटजेल, जेक्सन, टॉरेन्स आदि के द्वारा भी सृजनात्मक परीक्षणों को प्रतिपादित किया गया।

- भारत में बाकर मेहन्दी व पासी के द्वारा महत्वपूर्ण सृजनात्मकता परीक्षणों का निर्माण किया गया।
- इन परीक्षणों के माध्यम से कल्पनाशीलता, मौलिकता, विचारशीलता धाराप्रवाहित विस्तारण आदि विशेषताओं का मापन किया जाता था जो कि गिलफर्ड के द्वारा बताई गई है।

⇒ सृजनात्मकता के विकास के लिए शिक्षा का आयोजन :-

1. सृजनात्मकता के विकास के लिए उचित वातावरण व आवश्यक उपलब्ध करने चाहिए। *सीसाधन
2. बालकों में आत्मविश्वास की भावना जागृत करनी चाहिए।
3. पूर्ण स्वतन्त्रता प्रदान करनी चाहिए।
4. कक्षा का वातावरण अधिकार व दबाव से मुक्त तथा प्रजातांत्रिक होना चाहिए।
5. सृजनात्मकता के विकास के लिए विचारविश / मस्तिष्क विप्लव / मस्तिष्क उद्वेलन / ब्रेनस्टॉर्मिंग जैसे युक्ति स्थान का आयोजन करना चाहिए।
6. बालकों की कल्पनाशीलता को सकारात्मक रूप से देखना चाहिए।
7. विद्यालय में प्रोजेक्ट कार्य, शैक्षणिक भ्रमण, सामुदायिक विकास कार्यक्रमों में भागीदारी, समाजोपयोगी उत्पादन कार्यक्रम तथा विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं के आयोजन द्वारा बालकों को सृजनात्मक अभिव्यक्ति के अवसर दिए जाने चाहिए।

रुचि [Interest]

- किसी व्यक्ति वस्तु घटना आदि की ओर ध्यान केन्द्रित करने की प्रवृत्ति ही रुचि है।
- रुचि का सम्बंध मनोशारीरिक कारणों से होता है अर्थात रुचि पर वंशानुक्रम व वातावरण दोनों का प्रभाव पड़ता है। अतः रुचि जन्मजात व अर्जित होती है।

अवधान

अवधान से तात्पर्य है ध्यान केन्द्रित करना।
- अवधान के लिए पहली आवश्यकता है उत्तेजना की एकान्तता।

- मानसिक थकान होने पर अवधान करने में बाधा उत्पन्न होती है
- अवधान रुचि पर आधारित होती है।
- रुचि व अवधान एक सिक्के के दो पहलु है।

बालकों में रुचि जाग्रत करने के उपाय :-

1. अभिप्रेरित करना।
2. विषय वस्तु की जीवन में उपयोगिता बताकर।
3. विषय वस्तु की उद्देश्यपूर्णता बताकर।
4. विषय वस्तु को जीवन से जोड़कर। पढ़ाना।
5. ज्ञात से अज्ञात, सरल से जटिल, विशिष्ट से सामान्य, आदि शिक्षण सूत्रों के प्रयोग द्वारा।
6. श्रव्य-दृश्य सामग्री के प्रयोग द्वारा।
7. स्वयं करके सीखने के अवसर प्रदान करना।

अभिरुचि / अभियोग्यता / अभिक्षमता (Aptitude)

1. अभिरुचि एक प्रकृति प्रदत्त जन्मजात योग्यता होती है। यही कारण है कि कोई व्यक्ति डॉक्टर बनने की योग्यता

रखता है तो कोई इन्जीनियर, संगीतकार, अभिनेता आदि बनने की।

2. अभिरुचि वह वर्तमान स्थिति है जो भविष्य की ओर संकेत करती है।

3. अभिरुचि बालक की वर्तमान आदतों, निष्पादनों आदि के आधार पर भविष्यवाणी करती है कि बालक किस क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर सकता है।

4. अभिरुचि एक ऐसी मानसिक योग्यता है जो यह दर्शाती है कि प्रशिक्षण के द्वारा बालक किस क्षेत्र में कौशल अर्जित कर सकता है।

5. अभिरुचि परीक्षण के द्वारा बालक की दिशा निर्धारित की जा सकती है।

6. निर्देशन व परामर्श के क्षेत्र में अभिरुचि का विशेष महत्व है।

7. अभिरुचि का सम्बंध सम्पूर्ण व्यक्तित्व से है जबकि रुचि व्यक्तित्व का एक पहलू है।

अभिवृत्ति (Attitude) :- अभिवृत्ति से तात्पर्य व्यक्ति के दृष्टिकोण से है। यह दृष्टिकोण ही हमारे व्यवहार को एक निश्चित दिशा प्रदान करता है।

- अभिवृत्ति अपना रूप बदल भी सकती है।
- अभिवृत्ति पर मुख्य प्रभाव वातावरण का पड़ता है।
- अभिवृत्ति किसी भी व्यक्ति वस्तु घटना आदि के प्रति अनुकूल व प्रतिकूल दृष्टिकोण का प्रदर्शन करती है।
- सकारात्मक अभिवृद्धि का विकास नकारात्मक की अपेक्षा आसानी से हो जाता है।

- सकारात्मक अभिवृद्धि में एकदम से परिवर्तन नहीं लाया जा सकता इसे तो धीरे-2 मोड़ा जा सकता है।
- शिक्षक अपने विचारों, भावनाओं व उदाहरणों द्वारा अभिवृत्ति में परिवर्तन ला सकता है।

* आदतें (Habits)

गैरेट के अनुसार :-

जो व्यवहार बार-2 दोहराने से स्वचालित हो जाता है। उसे आदत कहते हैं।

- आदतें अर्जित होती है।
- आदतों में एकरूपता पायी जाती है।
- जिन कार्यों को करने की आदत पड़ जाती है। उनमें पर्याप्तता व सटीकता आ जाती है।
- अधिक ध्यान देने की आवश्यकता नहीं होती है।
- आदत की क्रियाओं में अधिक थकान महसूस नहीं होती है।
- आदत सुधार या परिवर्तन के लिए बाधा बन जाती है।
- आदतें हमारे समय व शक्ति को बचत करती है।
- आदतें हमारे व्यक्तित्व को एक दिशा प्रदान करती है।
- आदतें उपयोगी भी होती है व हानिकारक भी

आत्म सम्प्रत्यय (Self Concept)

1. संवेदना :-

जब एक नवजात शिशु किसी तेज आवाज को सुनकर चौंक जाता है अथवा उत्तेजित हो जाता है तो वह प्रारम्भिक अनुभूति संवेदना है। इसे ज्ञान की पहली सीढ़ी माना जाता है।

2. प्रत्यक्षीकरण :-

जब शिशु किसी तेज आवाज को सुनकर यह जान जाता है कि आवाज किसकी है तथा कहाँ से आ रही है तो इसे प्रत्यक्षीकरण कहते है। यह ज्ञान की दुसरी सीढ़ी है

- प्रत्यक्षीकरण का पूर्व अनुभव से सम्बंध होता है।
संवेदना + विचार = प्रत्यक्षीकरण

3. सम्प्रत्यय निर्माण :-

जब शिशु पक्षियो के किसी झुण्ड के पास जाता है जोर से ताली बजाता है तो सारे पक्षी उड़ जाते है यही से शिशु के मस्तिष्क मे सम्प्रत्यय का निर्माण होता है कि पक्षी उड़ते है।
धीरे-2 बालक में भार सम्प्रत्यय, आकार सम्प्रत्यय, रंग सम्प्रत्यय, समय सम्प्रत्यय, सौन्दर्य सम्प्रत्यय आदि का विकास होने लगता है।

4. आत्म सम्प्रत्यय :-

आत्म सम्प्रत्यय की अवधारणा का सर्वप्रथम विचार विलियम जेम्स ने अपनी पुस्तक Principles ob Psychology के अन्तर्गत प्रस्तुत किया।

- आत्मसम्प्रत्यय से तात्पर्य स्वयं के बारे मे विचार करने से है।
- यह स्व विकसित व्यक्तित्व की पहचान है।
- अपने बारे मे जानना, समझना, पहचानना ही आत्मसम्प्रत्य है।

- अपनी अच्छाइयों, बुराइयों शक्तियों व दुर्बलताओं सफलताओं व असफलताओं आदि के बारे में जानना व उनका आंकलन करना ही आत्म सम्प्रत्यय है।

सामाजिक कौशल (Social Skills): जीवन कौशलों की शिक्षा में सामाजिक कौशलों का विशेष महत्व है। सामाजिक कौशलों से परिपूर्ण व्यक्ति इस प्रजातांत्रिक समाज में एक जिम्मेदार नागरिक की भूमिका का निर्वाह करता है।

सामाजिक कौशल निम्न प्रकार के होते हैं।

1. अन्तर वैयक्तिक सम्बंध।
2. सजगता या जागरूकता।
3. सामाजिक भावना की परिपक्वता।
4. नेतृत्व कौशल।
5. समस्या समाधान कौशल।
6. सम्प्रेषण कौशल आदि।

↳ अर्थहीन आंकड़ों को क्रमबद्ध या व्यवस्थित कर अर्थपूर्ण बना देना सूचना है।

⇒ सूचना का आदान-प्रदान सम्प्रेषण कहलाता है।

⇒ सम्प्रेषण को अंग्रेजी में Communication कहते हैं।

Communication शब्द की उत्पति लेटिन भाषा के Communis से हुई है जिसका अर्थ है समान बनाना। (to make common)

(Communis)

सम्प्रेषण के दो पक्ष होते हैं।

1. सम्प्रेषक :- सूचना देने वाला।
2. सम्प्रेषी :- सूचना प्राप्त करने वाला।

सम्प्रेषण के प्रकार :-

1. अन्तर्वैयक्तिक सम्प्रेषण (Interpersonal Communication)
दो या दो से अधिक के मध्य बातचीत।

2. अन्तरवैयक्तिक सम्प्रेषण / अन्तर्वैयक्तिक / आत्म सम्प्रेषण
(Intrapersonal Communication)
स्वयं से बातचीत

3. लोक सम्प्रेषण (Mass Communication)
एक व्यक्ति व समूह के मध्य बातचीत

सम्प्रेषण माध्यम

1. शाब्दिक < मौखिक / लिखित

2. अशाब्दिक < मुखाकृति / सांकेतिक भाषा (शारीरिक हावभाव)

3. जनसंचार माध्यम | श्रव्य / दृश्य / श्रव्य-दृश्य